bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 अंक – 22

वर्तमान
कमल ज्योति

सर्वे सन्तु निरामयाः

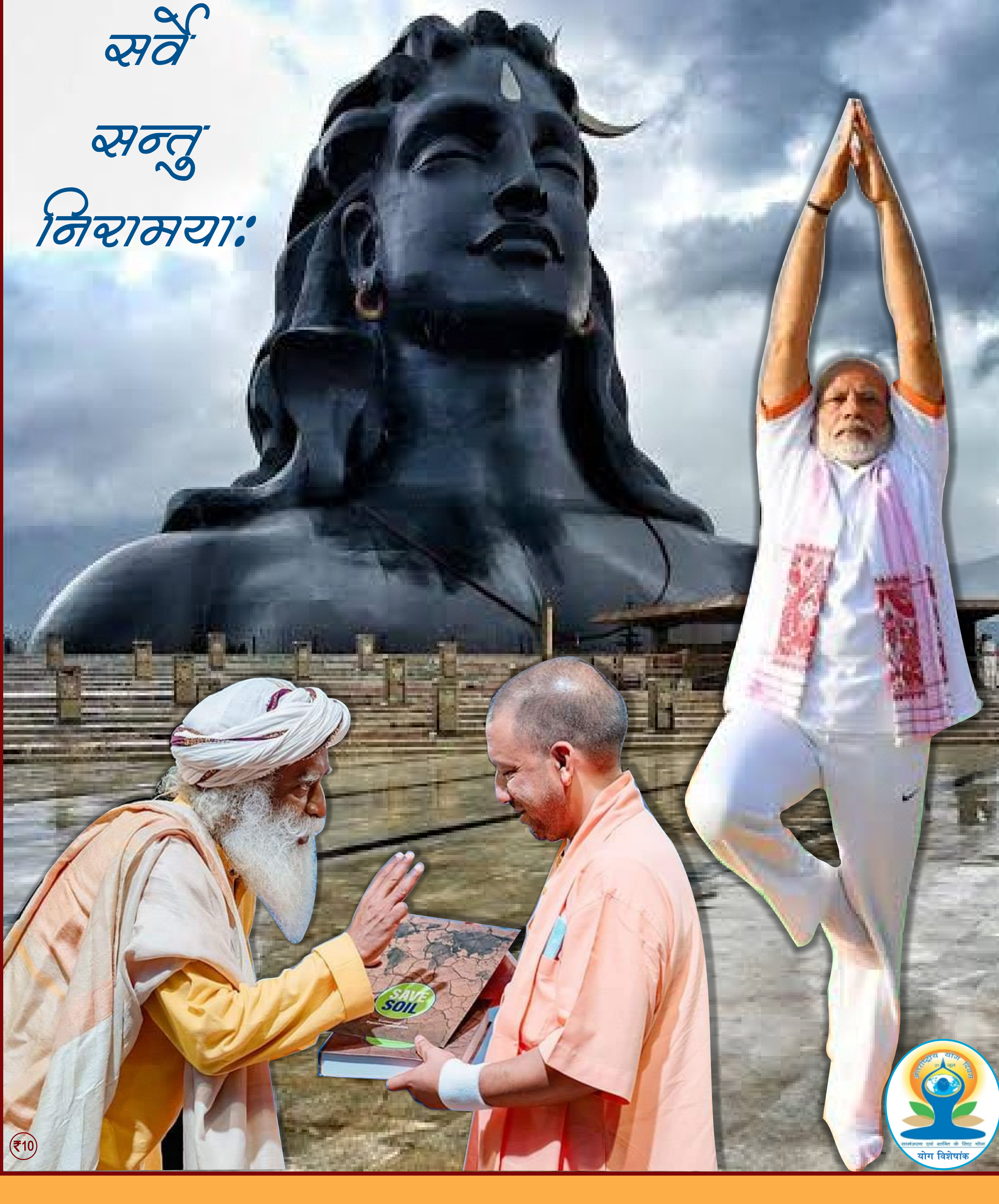

₹10

योग विशेषांक

उत्तर प्रदेश विधान परिषद द्विवार्षिक चुनाव में निवार्चित सदस्यों को बधाई

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री स्वतंत्र देव सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

नमामि शक्ति

कालिका मंदिर, पावागढ़, शक्तिपीठ पर ध्वजारोहण

सम्पादकीय

कर्मों में कुशलता ही योग है!

श्रीगीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि, योगः कर्मसु कौशलम अर्थात कर्मों में कुशलता ही योग है। हालांकि, यह वाक्य योग की परिभाषा नहीं है। यह कार्य को योग की संज्ञा देने वाला सूत्रवाक्य है। अधिकांश, विद्वान जीवात्मा और परमात्मा के मिल जाने को योग मानते है लेकिन, इसको स्वीकार करने में अधिकांश आपत्ति ये खड़ी होती है कि बौद्धमतावलम्बी भी, जो परमात्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करते, योग का समर्थन करते हैं। जबकि, सांख्यवादियों के लिए योग ईश्वर की सत्ता को असिद्ध करने का कारक हैं। महर्षि पतञ्जलि ने योगसूत्र में, जो कहा है–वह है योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः, चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम योग है। इसके दो अर्थ हैं चित्तवृत्तियों के निरोध की अवस्था का नाम योग है या इस अवस्था के उपाय को योग कहते हैं।

इस सब के बाद भी अपने देश भारत में योग का इतिहास लगभग 10,000 साल पुराना है। मानसिक, शारीरिक अध्यात्म के रूप में हम भारतीय प्राचीन काल से ही इसका अभ्यास कर रहे हैं। महर्षि अगस्त नामक सप्तऋषि ने पूरे भारतीय उपमहाद्वीप का प्रवास करके यौगिक तरीके से जीवन जीने की इस महासंस्कृति को गढ़ा था। योग की उत्पत्ति सर्वप्रथम भारत में ही हुई थी इसके बाद यह दुनिया के अन्य देशों में लोकप्रिय हुआ। महर्षि पतंजलि पहले और एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने योग को आस्था, अंधविश्वास और धर्म से बाहर निकालकर एक सुव्यवस्थित रूप दिया। योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक ऐसा अमूल्य उपहार है जो न केवल देश में बल्कि एशिया, मध्यपूर्व, उत्तरी अफ्रीका एवं दक्षिण अमेरिका सहित विश्व के भिन्न– भिन्न भागों में फैला हुआ है।

आस्था और अनास्था के कालानुक्रम में कई विद्वानों को आपत्ति भी है। उनका कहना है कि चित्तवृत्तियों के प्रवाह का ही नाम चित्त है। पूर्ण निरोध का अर्थ होगा चित्त के अस्तित्व का पूर्ण लोप, चित्ताश्रय समस्त स्मृतियों और संस्कारों का निःशेष हो जाना। यदि ऐसा हो जाए तो फिर समाधि से उठना संभव नहीं होगा। क्योंकि उस अवस्था के सहारे के लिये कोई भी संस्कार बचा नहीं होगा, प्रारब्ध दग्ध हो गया होगा। निरोध यदि संभव हो तो श्रीकृष्ण के इस वाक्य का क्या अर्थ होगा? योगस्थः कुरु कर्माणि, योग में स्थित होकर कर्म करो। विरुद्धावस्था में कर्म हो नहीं सकता और उस अवस्था में कोई संस्कार नहीं पड़ सकते, स्मृतियाँ नहीं बन सकतीं, जो समाधि से उठने के बाद कर्म करने में सहायक हों।

सही अर्थों में हम पाते हैं कि, योग के शास्त्रीय स्वरूप, उसके दार्शनिक आधार, को सम्यक रूप से समझना बहुत सरल नहीं है। संसार को मिथ्या माननेवाला अद्वैतवादी भी निदिध्याह्न के नाम से उसका समर्थन करता है। अनीश्वरवादी सांख्य विद्वान भी अनुमोदन करता है। बौद्ध ही नहीं, मुस्लिम सूफ़ी और ईसाई मिस्टिक भी किसी न किसी प्रकार अपने संप्रदाय की मान्यताओं और दार्शनिक सिद्धांतों के साथ उसका सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं।

इन विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं में किस प्रकार ऐसा समन्वय हो सकता है कि ऐसा धरातल मिल सके जिस पर योग की भित्ति खड़ी की जा सके। यह रोचक प्रश्न है परंतु इसके विवेचन के लिये समय चाहिए। यहाँ उस प्रक्रिया पर थोड़ा सा विचार कर लेना आवश्यक है जिसकी रूपरेखा हमको पतंजलि के सूत्रों में मिलती है। थोड़े बहुत शब्दभेद से यह प्रक्रिया उन सभी समुदायों को मान्य है जो योग के अभ्यास का समर्थन करते हैं।

योगश्चित्तवृतिनिरोधः अर्थात् चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। सांख्य दर्शन के अनुसार – पुरुष प्रकृत्योर्वियोगेपि योगइत्यमिधीयते। अर्थात् पुरुष एवं प्रकृति के पार्थक्य को स्थापित कर पुरुष का स्व स्वरूप में अवस्थित होना ही योग है। विष्णुपुराण के अनुसार – योगः संयोग इत्युक्तः जीवात्म परमात्मने अर्थात् जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलन ही योग है। भगवद्गीता के अनुसार – सिद्धासिद्धयो समोभूत्वा समत्वं योग उच्चते अर्थात् दुःख–सुख, लाभ–अलाभ, शत्रु–मित्र, शीत और उष्ण आदि द्वन्दों में सर्वत्र समभाव रखना योग है। भगवद्गीता के अनुसार – तस्माद्दयोगाययुज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् अर्थात् कर्त्तव्य कर्म बन्धक न हो, इसलिए निष्काम भावना से अनुप्रेरित होकर कर्त्तव्य करने का कौशल योग है। आचार्य हरिभद्र के अनुसार – मोक्खेण जोयणाओ सव्वो वि धम्म ववहारो जोगो अर्थात् मोक्ष से जोड़ने वाले सभी व्यवहार योग हैं। बौद्ध धर्म के अनुसार कुशल चितैकग्गता योगः अर्थात् कुशल चित्त की एकाग्रता योग है।

महर्षि पतंजलि ने पूर्ण कल्याण तथा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि के लिए आठ अंगों वाले योग का मार्ग विस्तार से बताया है। अष्टांग योग को आठ अलग–अलग चरणों वाला मार्ग नहीं समझना चाहिए। यह आठ आयामों वाला मार्ग है। जिसमें आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। यम यानि पांच सामाजिक नैतिकता। अपरिग्रह – आवश्यकता से अधिक संचय नहीं करना और दूसरों की वस्तुओं की इच्छा नहीं करना। नियम अर्थात पाँच व्यक्तिगत नैतिकतां आसन यज्ञ योगासनों द्वारा

शारीरिक नियंत्रण। प्राणायाम अर्थात श्वास–लेने सम्बन्धी खास तकनीकों द्वारा प्राण पर नियंत्रण। प्रत्याहार यानि इन्द्रियों को अंतर्मुखी करना। धारणा अर्थात एकाग्रचित्त होना। ध्यान अर्थात निरंतर ध्यान। समाधि के रूप में आत्मा से जुड़ना, शब्दों से परे परम–चैतन्य की अवस्था।

7000 ईसा पूर्व से 800 ईसवी के बीच, भारत में हजारों तेजस्वी योगियों, सिद्धों, साधु–संतों का जन्म स्थल बना। उनमें से कुछ प्रमुख योगी थे। ऋषि वशिष्ठ, भगवान कृष्ण, पाराशर ऋषि, व्यास ऋषि, अष्टावक्र, पतंजलि। लेकिन, नव–तंत्र को समझने और इसकी संभावनाओं को खोजने में आदियोगी (संभवतः भगवान शिव) जैसी कोशिश किसी ने नहीं किया था। उनके बाद भी हमें कोई ऐसा नहीं मिलता जिसका काम या योगदान उनके समान हो। योग के इतिहास में यह ऐसा युग था, जब योग की शिक्षाओं को लिखा जाने लगा और इस तरह योग की मौखिक परंपरा का अंत हो गया। इस अवधि में योग से संबंधित उत्कृष्ट साहित्य की एक समृद्ध परंपरा देखने को मिलती है, जैसे उपनिषद्, योग वशिष्ठ, योग सूत्र, भगवदगीता। हालांकि योग–शिक्षा को लिखित रूप दे दिया गया था, लेकिन सब कुछ बहुत ही गोपनीय और सांकेतिक रूप में लिखा गया। उन बातों को वही लोग समझ सकते थे, जिन्हें इसके लिए दीक्षित किया गया हो। इस युग में योग का मकसद मोक्ष और आत्मज्ञान था।

ऐसे ही ऋषि वशिष्ठ सप्तऋषियों में से एक थे। वे ब्रह्मा के मानसपुत्र थे। उनके पास दिव्य कामधेनु गाय और उसकी बछड़ी नंदिनी थे, जो अपने स्वामियों को किसी भी चीज का वरदान दे सकती थीं। वशिष्ठ की पत्नी अरुंधति थी। ऋग्वेद में वशिष्ठ ऋषि को मित्रवरुण और उर्वशी का पुत्र बताया गया है। उनका योग वशिष्ठ एक हिंदू आध्यात्मिक ग्रंथ है, जो भगवान वाल्मिकी द्वारा लिखा गया है। कुछ हिंदू मानते हैं कि यह मानव मन में उठने वाले सभी सवालों के जवाब दे सकता है और मोक्ष पाने में इंसान की मदद कर सकता है।यह महाभारत के बाद संस्कृत के सबसे लंबे ग्रंथों में से एक और योग का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें करीब 32,000 श्लोक हैं। उनके बाद भगवान कृष्ण आध्यात्मिक प्रक्रिया को पूरी दुनिया तक पहुंचाना चाहते थे। कृष्ण के जीवन का मकसद था आध्यात्मिक प्रक्रिया और राजनीतिक प्रक्रिया का आपस में मिलन कराना। उन्होंने सिर्फ राजाओं के साथ ही काम नहीं किया, बल्कि उत्तरी भारत के मैदानी इलाकों में हजारों आश्रम भी स्थापित किए। इसी क्रम में पाराशर ऋषि ऋग्वेदिक काल के एक महर्षि थे। वह एक परम ज्ञानी और सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने समाज में धर्म की स्थापना के लिए अथक प्रयास किया। ब्रह्मतेज की स्थापना के लिए उन्होंने पूर्ण समर्पित साधकों को लेकर देश भर में सैकड़ों आश्रमों की स्थापना की। उन्होंने उस वक्त के राजाओं से भी संपर्क साधने की कोशिश की ताकि ब्रह्मतेज – यानी संन्यासियों के धर्म, और क्षत्रतेज– यानी शासकों के धर्म, के बीच तालमेल बिठाया जा सके।

उनके बाद व्यासऋषि हिंदू परंपराओं में एक अहम और श्रद्धेय शख्सियत हैं। उन्हें वेद व्यास (यानि जिन्होंने वेदों को वर्गीकृत किया) के नाम से अधिक जाना जाता है। उनका एक नाम कृष्ण द्वैपायन भी था। व्यास को अठारह प्रमुख पुराण लिखने का श्रेय भी जाता है। उसी काल में अष्टावक्र एक ऐसे संत थे जो सत्य को कुछ इतने प्रभावशाली और तीखे ढंग से रखते थे जो कई बार लोगों चुभता था और उन्हें परेशान कर देता था। शरीर से अपंग होने के बावजूद अष्टावक्र की समझ और विचारों में ऐसी स्पष्टता थी कि उनके उपदेशों को लोग बड़ी उत्सुकता के साथ सुना करते थे। अष्टावक्र को शुरुआती साहित्य का रचनाकार माना जाता है। महान कृति अष्टावक्र गीता उन्हीं की रचना है। अष्टावक्र गीता को अष्टावक्र संहिता भी कहा जाता है। रामायण में भी अष्टावक्र का जिक्र मिलता है। महर्षि पतंजलि को योग का जनक माना जाता है। वे व्याकरण के विद्वान हैं, संगीतकार हैं, गणितज्ञ हैं और एक खगोलविद भी हैं। योगिक परंपरा में पतंजलि को शिव से कम नहीं समझा जाता है। योग परंपरा को आगे बढाते हुये गुरु गोरखनाथ का योगदान अप्रतिम माना जाता है। उनके द्वारा हठ प्रदीपिका नामक ग्रंथ लिखा। गोरखनाथ के क्रम में 84 सिद्धों और नवनाथ की परंपरा में कई ऋषियों ने योग को आगे बढ़ाया। आदि शंकराचार्य ने इंसापूर्व 508 में योग को व्यवस्थित कालानुक्रम दिया। इनमें सत ज्ञानेश्वर, संत रविदास, परमहंस योगानंद, रमण महर्षि और विवेकानंद तक बहुत लंबी श्रृखंला रही। 660 ईसाबाद हिन्दु परंपरा के 13 अखाड़ों में योग को अखाड़ा का केन्द्रबिन्दु माना गया।

योग का अस्तित्व सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही है और खुदाई के दौरान मिले अवशेषों पर शारीरिक योग मुद्राएं इस बात का सबूत देती है कि योग का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। दरअसल योग का इतिहास का पता उत्तरी भारत की सिंधु घाटी सभ्यता में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से चलता जिसमें सिक्के और कई अवशेषों पर ध्यान–योग मुद्राएं चित्रित थी। इससे इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि योग का इतिहास करीब 10000 वर्ष पुराना है। योग का उल्लेख साहित्य और सभी 4 वेदों ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अर्थवेद में भी किया गया है और वेद ही सबसे प्राचीन साहित्य माने जाते है। योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है और आजतक पूरी दुनिया में योग साधना का लाभ लाखों लोगों को हुआ है। साथ ही प्राचीन काल से ही योग के महान गुरुओं और आचार्यो द्वारा इसे परिरक्षित भी किया जाता रहा है।

प्राचीनता के समुद्र में एक कण का संचयन करते हुये भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितम्बर 2014 को सयुंक्त राष्ट्र महासभा में योग की पहल की थी। इसके बाद 11 दिसम्बर 2014 को सयुंक्त राष्ट्र में 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मंजूरी मिली। पहली बार 21 जून 2015 को यह दिवस मनाया गया। माना जाता है कि 21 जून वर्ष का सबसे बड़ा दिन होता है और योग भी मनुष्य की आयु को बढ़ाता है इस दृष्टि के साथ आज संपूर्ण विश्व में योग दिवस मनाने का यह आठवां वर्ष है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का संयुक्त राष्ट्र संघ में योग के मुद्दे को उठाना काफी महत्वपूर्ण कदम था जिसके फलस्वरूप आज 2022 में हम 8वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाये है।

akatri.t@gmail.com

''शांतिम् योगेन विंदति''

8वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विश्व भर में भव्य आयोजन कर लोगों ने स्वस्थ समाज के लिए योग को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। दुनिया भर के 200 देश आज योग को अपना चुके है। भारतीय ऋषि–मुनियों की इस धरोहर विरासत पर आज दुनिया गर्व कर रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस ''**मैसुरू पैलेस**'' में योग कर दुनिया को वसुंधैव कुटुम्बकम् का संदेश दिया। संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय सहित ब्रिटेन, निदरलैण्ड, नेपाल, चीन, श्री लंका आस्ट्रेलिया और बांग्लादेश समेत 150 देशों में योग के कार्यक्रम आयोजित हुए। उत्तर प्रदेश में हजारों स्थानों पर लोगों ने योग किया। लखनऊ राजभवन में माननीया राज्यपाल श्रीमती आन्दीबेन पटेल जी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कार्यक्रम में सहभाग किया।

योग दिवस के अवसर पर मैंग्लूरू के अंबा विलास पैलेस की जो तस्वीरें कुछ वर्ष पहले केवल घरों में, आध्यात्मिक केन्द्रों में दिखती थीं, वो आज विश्व के कोने–कोने से आ रही हैं। ये तस्वीरें आत्मिक बोध के विस्तार की तस्वीरें हैं। ये तस्वीरें एक सहज, स्वाभाविक और सांझी मानवीय चेतना की तस्वीरें हैं। खास तौर पर तब, जब दुनिया ने बीते दो सालों में सदी की इतनी बड़ी महामारी का सामना किया हो। इन परिस्थितियों में देश, द्वीप, महाद्वीप की सीमाओं से ऊपर, योग दिवस का ये उत्साह, ये हमारी जीवटता का भी प्रमाण है।

योग अब एक वैश्विक पर्व बन गया है। योग किसी व्यक्ति मात्र के लिए नहीं, संपूर्ण मानवता के लिए है। इसीलिए, इस बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम है–Yoga for humanity! मैं इस थीम के जरिए योग के इस संदेश को पूरी मानवता तक पहुंचाने के लिए यूनाइटेड नेशन्स का और

कार्यक्रम में मोदी जी ने कहा कि में आना विलास पैलेस में हुए कार्यक्रम में मोदी जी ने कहा कि मैं कर्नाटक की सांस्कृतिक राजधानी, आध्यात्म और योग की धरती मैसूरू को प्रणाम करता हूं। मैसूरू जैसे भारत के आध्यात्मिक केन्द्रों ने जिस योग–ऊर्जा को सदियों से पोषित किया, आज वो योग ऊर्जा विश्व स्वास्थ्य को दिशा दे रही है। आज योग वैश्विक सहयोग का पारस्परिक आधार बन रहा है। योग मानव मात्र को निरोग जीवन का विश्वास दे रहा है। योग सभी देशों का हृदय से धन्यवाद करता हूं। मैं दुनिया के सभी नागरिकों का भी सभी भारतीयों की तरफ से अभिनंदन करता हूं।

योग के लिए हमारे ऋषियों, हमारे महर्षियों ने, हमारे आचार्यों ने कहा है–''**शांतिम् योगेन विंदति**''।

भारत में हम इस बार योग दिवस हम एक ऐसे समय पर मना रहे हैं, जब देश अपनी आजादी के 75वें वर्ष का पर्व अमृत महोत्सव मना रहा है। योग दिवस की ये व्यापकता, ये

स्वीकार्यता भारत की उस अमृत भावना की स्वीकार्यता है, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को ऊर्जा दी थी।

इसी भावना को celebrate करने के लिए आज देश के 75 अलग–अलग शहरों के 75 ऐतिहासिक स्थलों के साथ ही, अन्य नगरों के लोग भी ऐतिहासिक स्थानों पर योग कर रहे हैं। जो ऐतिहासिक स्थान भारत के इतिहास के साक्षी रहे, जो स्थान सांस्कृतिक ऊर्जा के केंद्र हैं, वो आज योग दिवस के जरिए एक साथ जुड़ रहे हैं।

इस मैसूरू पैलेस का भी इतिहास में अपना ही विशेष स्थान है। भारत के ऐतिहासिक स्थलों पर सामूहिक योग का अनुभव, भारत के अतीत को, भारत की विविधता को, और भारत के विस्तार को एक सूत्र में पिरोने जैसा है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हमने इस बार Guardian Ring of Yoga ये Guardian Ring of Yoga का ऐसा ही अभिनव प्रयोग आज पूरे विश्वभभर में हो रहा है। दुनिया के अलग–अलग देशों में सूर्योदय के साथ, सूर्य की गति के साथ, लोग योग कर रहे हैं, योग से जुड़ रहे हैं। जैसे–जैसे सूर्य आगे बढ़ रहा है, उदय हो रहा है, उसकी प्रथम किरण के साथ अलग–अलग देशों में लोग साथ जुड़ते जा रहे हैं, पूरी पृथ्वी के चारों ओर योग की रिंग बन रही है। यही है Guardian Ring of Yoga- योग के ये प्रयोग स्वास्थ्य, संतुलन और सहयोग की अद्भुत प्रेरणा दे रहे हैं।

दुनिया के लोगों के लिए योग आज हमारे लिए केवल part of life नहीं है, please remind ये part of life नहीं है, बल्कि योग अब way of life बन रहा है। हमारा दिन योग के साथ शुरू हो, इससे बेहतर शुरुआत और क्या हो सकती है? लेकिन, हमें योग को किसी एक खास समय और स्थान तक ही सीमित नहीं रखना है। हमने देखा भी है, हमारे यहाँ घर के बड़े, हमारे योग साधक दिन के अलग–अलग समय में प्राणायाम करते हैं। कई लोग अपने ऑफिस में भी काम के बीच में कुछ देर दंडासन करते हैं, फिर दोबारा काम शुरू करते हैं। हम कितने भी तनावपूर्ण माहौल में क्यों न हों, कुछ मिनट का ध्यान हमें relax कर देता है, हमारी productivity को बढ़ा देता है।

इसलिए, हमें योग को एक अतिरिक्त काम के तौर पर नहीं लेना है। हमें योग को जानना भी है, हमें योग को जीना भी है। हमें योग को पाना भी है, हमें योग को अपनाना भी है और हमें योग को पनपाना भी है। और जब हम योग को जीने लगेंगे, योग दिवस हमारे लिए योग करने का नहीं, बल्कि अपने स्वास्थ्य, सुख और शांति को celebrate करने का माध्यम बन जाएगा।

आज समय है कि हम योग से जुड़ी अनंत संभावनाओं को साकार करें। आज हमारे युवा बड़ी संख्या में योग के क्षेत्र में नए–नए ideas के साथ आ रहे हैं। इस दिशा में हमारे देश में आयुष मंत्रालय ने 'स्टार्टअप योगा चैलेंज' भी लांच किया है। योग के अतीत को, योग की यात्रा को और योग से जुड़ी संभावनाओं के लिए यहां मैसूरू के दशहरा ग्राउंड में Innovative digital Exhibition भी लगी है।

मैं देश के, और दुनिया के सभी युवाओं से इस तरह के प्रयासों से जुड़ने का आह्वान करता हूं। मैं वर्ष 2021 के लिए "Prime Minister's Awards for outstanding contribution for Promotion and Development of Yoga" के जो winner हैं, मैं उन सभी winners को हृदय से बहुत–बहुत बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है, योग की ये अनादि यात्रा अनंत भविष्य की दिशा में ऐसे ही अनवरत चलती रहेगी।

हम 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः' के भाव के साथ एक स्वस्थ और शांतिपूर्ण विश्व को योग के माध्यम से भी गति देंगे। इसी भाव के साथ, आप सभी को एक बार फिर योग दिवस की बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

राजभवन लखनऊ में योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कोरोनाकाल में लोगों ने योगा कर अपनी जीवन शक्ति को बढ़ाया। मानवता के लिए योग जरूरी है। नरेन्द्र मोदी जी के प्रयास से योग को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई। अन्तराष्ट्रीय योग दिवस पर उत्तर प्रदेश में 75000 सीनों पर योगाभ्यास सम्पन्न हुआ जिसमें 5 करोड़ से अधिक लोगों ने भाग लिया। इसके लिए इस विधा को बढ़ाने में लगे सभी आचार्य साधकों को आभार! धन्यवाद

विकासवाद की राजनीतिक संस्कृति को नया आयाम

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नडडा ने उ0प्र0 के गोरखपुर में भाजपा के सात जिला कार्यालयों का उद्घाटन करने के पश्चात् गरीब कल्याण सभा को संबोधित करते हुए कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी की आठ साल में गरीब, महिलाओं और युवाओं का सशक्तिकरण हुआ है।

क्षेत्रीय कार्यालय का उद्घाटन के साथ ही डिजिटली छह कार्यालयों का भी लोकार्पण हुआ।

ये आदरणीय प्रधामंत्रीमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गरीब कल्याण नीतियों की ही सफलता है कि विगत 8 वर्षों में देश में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या 22 प्रतिशत से घट कर 10 प्रतिशत पर आ गई है। इसी तरह, अत्यंत गरीबी की दर भी 0.8 प्रतिशत पर स्थिर बनी हुई है।

बाबा गोरखनाथ को नमन करते हुए श्री नड्डा ने कहा कि कार्यालय उद्घाटन के साथ–साथ मुझे गरीब कल्याण सभा में भी भाग लेने का अवसर मिला है। उत्तर प्रदेश में भाजपा के 72 जिलों में से 69 जिलों में कार्यालय बन चुके हैं। शेष 6 जिलों में कार्यालय निर्माणाधीन है। भाजपा एक तरफ पार्टी कार्यालय का उद्घाटन करती है तो वहीं, गरीब कल्याण मेला लगाकर जनकल्याण की विभिन्न योजनाओं से गरीबों को लभान्वित भी करवाती है। 2014 में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इच्छा जतायी कि देश के सभी प्रदेश, जिला और संभाग पार्टी का कार्यालय भवन होना चाहिए। भाजपा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री अमित शाह जी ने सभी जिलों में कार्यालय भवन बनाने की रूपरेखा तैयार की। देश भर में भाजपा के 512 जिला कार्यालय बनने हैं, जिसमें से 230 कार्यालय भवन बनकर तैयार हो गए हैं और 150 कार्यालय भवन निर्माणाधीन है। हमारे लिए पार्टी कार्यालय जीता–जागता संस्कार केन्द्र होता है। भाजपा कार्यालय में कुशाभव ठाकरे, श्यामा प्रसाद मुखर्जी सहित महापुरुषों की तस्वीरें देखने पर याद आता है कि ये भाजपा कार्यालय की नींव रखने वाले महान मनीषियों की तस्वीर हैं। एक लंबा सफ़र तय कर भारतीय जनता पार्टी आज यहाँ तक पहुंची है।

गरीब कल्याण सभा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश की राजनीतिक कार्यसंस्कृतिक बदल कर रख दी है। उन्होंने वंशवाद, परिवारवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, पंथवाद, भ्रष्टाचार, अनाचार और तुष्टिकरण की राजनीति को ख़त्म कर विकासवाद की राजनीतिक संस्कृति को नया आयाम दिया है। श्री नरेन्द्र मोदी जी 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास मंत्र' लेकर चले हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश में एक जवाबदेह वाली सरकार दी है। मोदी जी के नेतृत्व में देश को आगे बढ़ रहा है तो उनके मार्गदर्शन में योगी आदित्यनाथ जी भी उत्तर प्रदेश आगे बढ़ा रहे हैं।

आजादी के 70 सालों में कांग्रेस सरकार की निष्क्रियता पर तीखा हमला करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि इस देश में मिजल्स वैक्सीन पहुंचने में 28 साल, चिकेन पॉक्स की वैक्सीन आने में 27 साल, पल्स पोलियो ड्रॉप पहुंचने में 29 साल और जापानी इंस्फेलाईटिस की वैक्सीन पहुंने में 100 साल लग गए। पहले की सरकारें इतनी अधिक असंवेदनशील थी। कोरोना के दस्तक देने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अप्रैल 2020 में इसके वैक्सीन को विकसित करने के लिए "टास्क फोर्स" गठित किया। प्रधानमंत्री जी ने अक्टूबर 2020 में देश में दो स्वदेशी कोरोनोरोधी वैक्सीन के ट्रायल की मंजूरी दी। जनवरी 2021 में लोगों को दो–दो स्वदेशी वैक्सीन का डोज लगवाना शुरू हो गया। कोरोनारोधी वैक्सीनेशन का दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे तेज गति से चलने वाल टीकाकरण अभियान बन गया। नौ महीने के भीतर देश में दो–दो स्वदेशी वैक्सीन विकसित किए गए और बड़े पैमाने पर प्रोडक्शन हुआ। आज लगभग 200 करोड़ डोज देश में एडमिनिस्टर हुए हैं। इस सुरक्षा कवच की वजह से ही आज भारत कोरोना को मात देने में सफल हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अब भारत वैक्सीन लेने वाला देश नहीं रहा, बल्कि दुनिया को वैक्सीन देने वाला देश बना। स्वदेशी वैक्सीन के टीकाकरण अभियान के बारे में अखिलेश यादव जी कहते थे कि यह मोदी वैक्सीन है, भाजपा की वैक्सीन है, इस मत लगवाओ। ये अलग बात है कि उन्होंने चुपके–चुपके वे खुद वैक्सीन के डोज लगवा लिया और जनता को गुमराह किया।

श्री नड्डा ने कहा कि यूक्रेन–रूस युद्ध हुआ, तब देश के 23 हजार बच्चे यूक्रेन में फंसे हुए थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से बातचीत कर देशवासियों की सुरक्षित घर वापसी के लिए सेफ कॉरिडोर तैयार कराया और ऑपरेशन गंगा अभियान शुरू हुआ। कुशल विदेश नीति की वजह से 23 हजार बच्चों को यूक्रेन से सकुशल निकालकर वापस देश लाया गया। दूसरे देश के बच्चे भी तिरंगा लेकर यूक्रेन से बाहर निकलने में सफल हुए। यह है हमारी जवाबदेह सरकार।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण की नीति पर विस्तार से चर्चा करते हुए भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि देश में गरीबी उन्मूलन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

मोदी जी की योजनाओं और कार्यक्रमों का बहुत बड़ा योगदान है। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत विगत दो वर्षों से देश के लगभग 80 करोड़ लोगों को मुफ्त आवश्यक राशन पहुंचाया जा रहा है। स्वच्छता अभियान, उज्ज्वला योजना, सौभाग्य योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, किसान सम्मान निधि आदि योजनाओं ने गरीबों को सशक्त बनाया है।

श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आत्मनिर्भर भारत अभियान शुरू किया और इसके तहत 'वोकल फॉर लोकल' को प्रोत्साहित किया। अब खादी 'वन आफ द फास्टेस्ट मुविंग कंज्यूमर गुडस' बन गया है। पिछले वित्तीय वर्ष में खादी का रिकॉर्ड टर्नओवर भी हुआ है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने देश में वन नेशन, वन जीएसटी लागू किया गया। वन नेशन, वन ग्रिड की व्यवस्था होने से पूरे देश में बिजली ट्रांसमिशन की सुविधा बढ़ गयी। इसी तरह से वन नेशन वन मोबिलिटी, वन नेशन, वन राशन कार्ड इत्यादि आधुनिक तकनीक से बड़े बदलाव किये गए हैं। 2014 में देश के 100 ग्राम पंचायत ऑप्टिकल फाइबर से जुड़े थे। आज देश में ढाई लाख ग्राम पंचायत ऑप्टिकल फाइबर से जुड़ गए हैं। गाँवों में ऑप्टिकल फाइबर का जाल बिछाने से ग्राम पंचायतों में रहने वाले सामान्य नागरिकों के जीवन बहुत बड़ा बदलाव आया है, उनकी आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ गयी है। गांवों में सर्विस सेक्टर का विकास भी तेजी से हुआ है। यह है गरीब कल्याण की दिशा में सार्थक कदम।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश की राजनीतिक कार्यसंस्कृतिक बदल कर रख दी है। उन्होंने वंशवाद, परिवारवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, पंथवाद, भ्रष्टाचार, अनाचार और तुष्टिकरण की राजनीति को खत्म कर विकासवाद की राजनीतिक संस्कृति को नया आयाम दिया है।

श्री नड्डा ने कहा कि गोरखपुर में फर्टिलाइजर की फैक्ट्री थी। पांच–पांच प्रधानमंत्री यहाँ आकर वादा करके चले गए किन्तु फैक्ट्री चालू नहीं हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने फैक्ट्री को फिर से शुरू करवाया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधा को बेहतर बनाने के लिए गोरखपुर में एम्स स्थापित किया गया। पहले देश में सिर्फ एक ऑल इंडिया मेडिकल सायंस था। पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 7 नए एम्स स्थापित किये और विगत 8 वर्षों में श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 नए एम्स खोले। पिछले 8 वर्षों में देश में 170 नए मेडिकल कॉलेज खुले हैं। यूपी में 2014 में 15 मेडिकल कॉलेज थी आज 73 मेडिकल कॉलेज पर काम चल रहा है। गोरखपुर में बीआरडी मेडिकल कॉलेज में विशेष सुपर स्पेशियलिटी ब्लाक खोला गया है। माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि ये आदरणीय प्रधामंत्रीमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गरीब कल्याण नीतियों की ही सफलता है कि विगत 8 वर्षों में देश में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या 22 प्रतिशत से घट कर 10 प्रतिशत पर आ गई है। इसी तरह, अत्यंत गरीबी की दर भी 0.8 प्रतिशत पर स्थिर बनी हुई है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में वैश्विक कोरोना संकट के बावजूद देश की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। आज देश का विकास दर 8.7 प्रतिशत है जबकि दुनिया के कई बड़े देश इस मामले में हमसे काफी पीछे हैं। आज भारत उपभोग मामले में दुनिया में तीसरे स्थान पर और रिटेल बाजार में दूसरे स्थान पर है। भारत ने पिछले वित्त वर्ष में रिकॉर्ड निर्यात किया है। साथ ही, देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में रिकॉर्ड मात्रा में हुआ है।

श्री नड्डा ने कहा कि कांग्रेस 70 साल तक महात्मा गांधी और खादी के नाम पर राजनीतिक रोटी सेंकती रही लेकिन खादी को आगे बढ़ाने के लिए कोई सार्थक कदम नहीं उठाया। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आत्मनिर्भर भारत अभियान शुरू किया और इसके तहत "वोकल फॉर लोकल" को प्रोत्साहित किया। अब खादी "वन आफ द फास्टेस्ट मुविंग कंज्यूमर गुडस" बन गया है। पिछले वित्तीय वर्ष में खादी का रिकॉर्ड टर्नओवर भी हुआ है।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि मैंने इतनी देर आपसे बात की लेकिन कभी भी जाति, पंथ या एक समुदाय की बात नहीं की। किसी को तोड़ने की बात नहीं की जबकि कांग्रेस और समाजवादी नेता समाज में एक–दूसरे को लड़ाकर सिर्फ अपना वोट साधते है और चलते बनते हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हम गांव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, पिछड़े, आदिवासी, युवा एवं महिलाओं को विकास की मुख्यधारा में शामिल कर भारत को आगे बढ़ाने के लिए काम करते हैं। भाजपा कार्यकर्ता समाज में परिवर्तन का वाहक बन कर आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में विकासवाद को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें, यही अपेक्षा है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह, प्रदेश संगठन महामंत्री श्री सुनील बंसल, श्री रवि किशन, के सांसद श्री रमापति राम त्रिपाठी, श्री राधामोहन अग्रवाल जी, कई और सांसद, प्रदेश सरकार में मंत्री और भारी संख्या में लाभार्थी बंधु उपस्थित थे। उन्होंने कुछ चुनिंदा लाभार्थियों में गरीब कल्याण योजनाओं का वितरण भी किया। उप–मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य अयोध्या के कार्यालय लोकार्पण कार्यक्रम में भाग लिया और श्री ब्रजेश पाठक रायबरेली से इस कार्यक्रम से वर्चुअली जुड़े।

सर्व उपयोगी योग ''सूर्य नमस्कार''

ॐ मित्राय नमः।
ॐ रवये नमः।
ॐ सूर्याय नमः।
ॐ भानवे नमः।
ॐ खगाय नमः।
ॐ पूष्णे नमः।
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।
ॐ मरीचये नमः।
ॐ आदित्याय नमः।
ॐ सवित्रे नमः।
ॐ अर्काय नमः।
ॐ भास्कराय नमः।
ॐ श्रीसवितृसूर्यनारायणाय नमः।

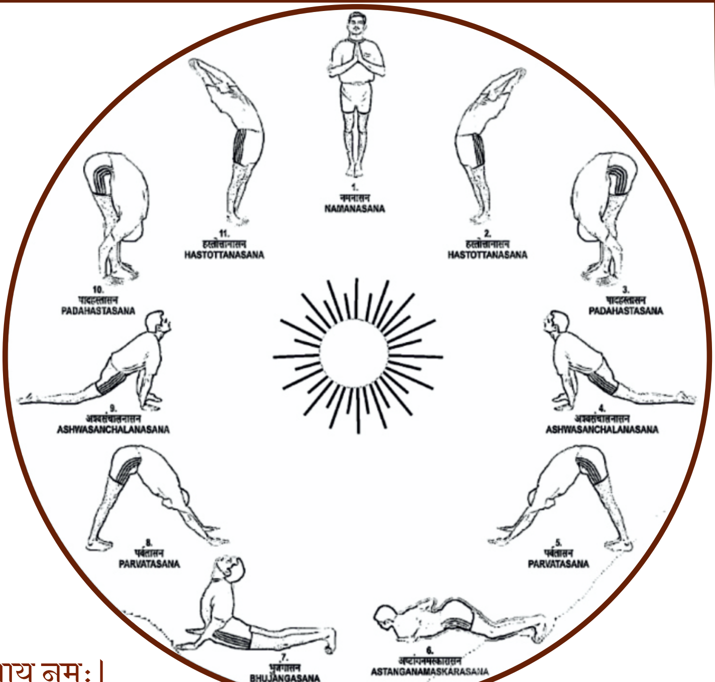

भारत की प्राचीन आरोग्य विधा में योग के अद्भुत प्रयोग यहाँ के ऋषि मुनियों ने किया है। जिसमें सूर्य नमस्कार तेरह मंत्रों सहित करने से शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा चित स्वस्थ, शान्त कर्मशील होता है। सूर्य नमस्कार एक ऐसी योग प्रक्रिया है जिसका अभ्यास करने से पूरे शरीर के अंग, कोशिकाएं, मांशपेशियां को लाभ पहुँचता है पुरे शरीर को ऊर्जावान बनाये रखता है। सूर्य नमस्कार वैदिक युग मे ऋषियों का सर्व सिद्ध योग है। योग में, सूर्य का प्रतिनिधित्व पिंगला या सूर्य नाड़ी द्वारा किया जाता है, जो प्राणिक चलन है, जो प्राण शक्ति प्रदान करता है। सूर्य नमस्कार का शरीर की सौर ऊर्जा पर सीधा प्रभाव पड़ता है जो पिंगला नाडी से होकर बहती है। सूर्य नमस्कार का नियमित अभ्यास पिंगला नाडी को नियंत्रित करता है। सूर्य नमस्कार शरीर के सभी जोड़ों, मांसपेशियों और आंतरिक अंगों को ढीला करने, खींचने, मालिश करने और उन्हें टोन करने का एक प्रभावी तरीका है।

आसान विधिः सूर्य नमस्कार के एक चक्र में 13 मुद्राएं होती हैं:

1: पूर्व की ओर, जहां से सूरज उदय होता है, उस दिशा में हाथ जोड़कर खड़े हों।

2: धीरे धीरे बाहों को सीधें उठाएं तथा धड़ की ओर ले जाएं, कमर से कंधों की ओर, पीछे, जहां तक सम्भव हो।

3: फिर बाहों को आगे की ओर लाएं और धीरे धीरे नीचे ले जाएं, ताकि पैरो की ओर से जमीन को छू लें जबकि सिर घुटनों को छूना चाहिए। घुटने सीधे होने चाहिएं।

4: खड़ें हो, बिना किसी मोड़ के बायां पैर पीछे की ओर ले जाएं जबकि वक्षस्थल को न फुलाएं।

5: हाथों को नीचे लाते हुए जमीन को छुएं, पैरों को पीछे ले जाएं जबकि नितम्ब जितना उठ सके उतना उठाएं तथा पूरे शरीर को स्थिर रखें।

6: अब पूरे शरीर को जमीन की ओर ढकेलते हुए उसे जमीन के पास तथा समानान्तर लाएं। इस स्थिति में माथा, दोनों हथेलियां, वक्षस्थल, घुटनें तथा अंगूठें जमीन को छूना चाहिएं।

7: पूरे शरीर को हाथों व पैरों पर सम्भालते हुए, शरीर के ऊपरी हिस्से को ऊपर व पीछे की ओर उठाएं तथा वक्षस्थल को बढ़ाएं व पीछे देंखें।

8: मुद्रा 5 की जैसी मुद्रा को दोहराएं।

9: मुद्रा 4 की जैसी मुद्रा को दोहराएं।

10: मुद्रा 3 की जैसी मुद्रा को दोहराएं।

11: मुद्रा 2 की जैसी मुद्रा को दोहराएं।

12: नमस्कार स्थिति की आरम्भिक स्थिति में वापस आएं।

सूर्य नमस्कार के उपरान्त शवासन में आराम करना जरूरी हैं।

सावधानियांः निम्न परिस्थिति में सूर्य नमस्कार नहीं करनी चाहिए।

- उच्च रक्तचाप
- कोरोनरी धमनी रोग
- स्ट्रोक
- हर्निया
- आंतों के तपेदिक
- मासिक धर्म की शुरुआत दौर

सूर्य नमस्कार के अद्भुत फायदे :

1. सौंदर्य, स्वस्थ और चमकती हुई त्वचा के लिए सूर्य नमस्कार बहुत लाभकारी है। सूर्य नमस्कार खूबसूरत त्वचा और गोरा रंग पाने का एक प्रभावी योग प्रक्रिया है। यह अभ्यास त्वचा के माध्यम से अपशिष्ट उत्पादों की पर्याप्त मात्रा में निकालने में सक्षम है जिससे यह फुंसियों और फोड़े को रोकता है।
2. सूर्य नमस्कार में कई ऐसे योग हैं जो खोपड़ी क्षेत्र में रक्त परिसंचरण को बढ़ाते हैं। पर्वतासन, पादहस्तासन जैसे योग व्यायाम सिर क्षेत्र में रक्त की आपूर्ति को बढ़ाते हैं और साथ

ही साथ खोपड़ी का मालिश भी करता है जिससे बालों के गिरने और बालों के भूरे होने की रोकथाम में लाभ होता है।

3. शरीर के वजन को कम करने के लिए सूर्य नमस्कार एक प्रभावी प्रक्रिया है। यह पेट की चर्बी को कम करने और सपाट पेट के लिए अच्छा है। इस मॉड्यूल के सभी योग पोज़ में पूरे शरीर को पर्याप्त स्ट्रेचिंग, ट्विस्टिंग और कंप्रेसिंग की सुविधा प्रदान करते हैं और इस तरह वजन घटाने के लिए उपयोगी मॉडल है। यह उन लोगों के लिए एक अद्भुत अभ्यास है जो वजन घटाने के लिए तरस रहे हैं।

4. इसका अभ्यास पाचन तंत्र को बेहतर मालिश प्रदान करता है और इसे कुशलता से काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस मॉड्यूल के नियमित अभ्यास से एलिमेंटरी कैनाल के कई रोगों और विकारों को हटाने और रोकने में मदद मिलती है। यह आंतों के पेरिस्टलसिस को उत्तेजित करता है और शरीर से अपशिष्ट उत्पादों को निकालता है।

5. यह किडनी की मालिश करता है, रक्त की आपूर्ति बढ़ाता है और साथ ही पूरे शरीर में रक्त के संचार को गति देता है। इसका नियमित अभ्यास गुर्दे को कुशलता से काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

6. सूर्य नमस्कार हृदय के लिए पूरे परिसंचरण तंत्र का काम करता है। यह शरीर से अपशिष्ट उत्पादों को हटाने के लिए अच्छा है और कुशल मानव हृदय कार्य सुनिश्चित करता है। शरीर के सभी कोशिकाओं और ऊतकों को ताजा ऑक्सीजन और पोषक तत्व प्राप्त कराने में मदद करता है।

7. इस मॉड्यूल का अभ्यास फेफड़ों और श्वसन प्रणाली के इष्टतम उपयोग में मदद करता है। यह फेफड़ों के वायु थैली या वायुकोशिका को उचित रूप से फैलता है और सिकोड़ता है, कीटाणुओं के निर्माण को रोकता है और श्वसन प्रणाली के कई रोगों को रोकता है।

8. सूर्य नमस्कार विभिन्न अंतःस्रावी ग्रंथियों की किसी भी अनियमितता को दूर करने में मदद करता है

9. तंत्रिकाओं का बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करता हुए अंगों और मांसपेशियों के कुशल काम को निर्धारित करता है। सूर्य नमस्कार इन सभी मांसपेशियों और नसों को टोन करता है और मस्तिष्क केंद्रों को जागृत करता है।

10. यह शरीर की सभी मांसपेशियों को सक्रिय करता है और पूरे शरीर को गहन खिंचाव प्रदान करता है। मांसपेशियों का विस्तार और संकुचन गुर्दे और फेफड़ों को अशुद्ध रक्त के पुनर्निर्देशन में मदद करता है।

प्रदेश का सांस्कृतिक वैभव लौटेगा : केशव

महात्मा ज्योतिबा राव फुले की प्रतिमा का अनावरण

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य द्वारा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं सहित अन्य योजनाओं के लाभार्थियों को लाभान्वित करते हुए प्रशस्ति पत्र भेंट किए। उन्होंने विद्युत सखी को थर्मल प्रिंटर निःशुल्क भेंट किए, दो महिला समूह को सामुदायिकशौचालय के मेंटेनेंस के लिए अनुबंधपत्र, आईसीआरपी को अनुशंसा प्रमाण पत्र, बीसी सखियों को साड़ियां, महिला किसानों को बीज मिनी किट, प्रधानमंत्री आवास/मुख्यमंत्री आवास के लाभार्थियों को आवास की चाबी, उज्ज्वला योजना अंतर्गत लाभार्थियों को गैस कनेक्शन, विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना, आयुष्मान गोल्डन कार्ड, आईसीडीएस द्वारा हाइजीन किट, दिव्यांगों को दिव्यांग उपकरण भेंट किए।

गरीब कल्याण सभा

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने गरीब कल्याण जनसभा को संबोधित करते हुए सरकारी योजनाओं से लाभान्वित लोगों को चाबी और प्रमाण पत्र देकर उनका हालचाल जाना। उन्होंने सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए कहा कि बुंदेलखंड के डिफेंस कॉरिडोर की मिसाइल दुश्मनों पर गरजेंगी। बुंदेलखंड के लोगों को रोजगार मिलेगा और बुंदेलखंड खुशहाली की ओर आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि गरीब कल्याण के तहत सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास का नारा भी प्रधानमंत्री जी ने दिया। प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में मेडिकल कॉलेज बनाए जा रहे हैं और अब प्रदेश मेंअमृत सरोवर भी बनाए जा रहे हैं। तहसील मऊरानीपुर के मेला मैदान में गरीब कल्याण जनसभा को सम्बोधित करते हुए मौर्य ने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में भारत आत्मनिर्भर बन रहा है। भारत में ही एक से एक बढ़कर मिसाइल ने तैयार होने लगी है, जनपद झांसी के डिफेंस कॉरिडोर में आकाश और ब्रह्मोस मिसाइल तैयार होगी।

समूचे देश में हर घर नल से जल भेजने की योजना चल रही है। पूरे प्रदेश में विकास कार्य चल रहे हैं।उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने बुंदेलखंड को देश का गौरव बताते हुए कहा कि बुंदेलखंड में ऐतिहासिक विकास कार्य मा0 मोदी जी के नेतृत्व में कराए जा रहे हैं।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा की देश में लगभग 80 करोड़ लोगों को फ्री में राशन दिया जा रहा है। उन्होंने कहा अगर कोई कोटेदार गड़बड़ करता है तो अब समूह की महिलाओं को कोटा आवंटित किया जा रहा, यह निर्णय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने लिया। उन्होंने कहा कि किसान सम्मान निधि के करोड़ों किसानों को रूपए सीधे उनके खाते में दिये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि 67 लाख फ्री में बिजली कनेक्शन दिए गए हैं, बजट में व्यवस्था की गई है कि उज्ज्वला योजना के तहत दो–दो सिलेंडर मुफ्त दिए जाएंगे,

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व की सरकार ने गांवों, गरीब, किसान, महिलाओं, युवाओं तथा समाज के सभी वर्गो के जीवन स्तर को उठाने के लिये योजनाओं का क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर किया है। गरीबों को निःशुल्क आवास, शुद्ध पेयजल, सामुदायिक शौचालय, जनधन खाते तथा किसान सम्मान निधि पेंशन उनके निजी खाते में शत् प्रतिशत धनराशि प्राप्त हो रही है। उन्होने कहा कि सरकार ने महिलाओं को उज्जवला योजना के अन्तर्गत निःशुल्क गैस कनेक्शन दिया गया है। इसी तरह गरीबों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुये 5 लाख रूपये तक निःशुल्क उपचार हेतु आयुष्मान योजना के अन्तर्गत लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाये गये है। जिसके माध्यम से गरीब व्यक्ति भी किसी भी निजी अस्पताल में निःशुल्क इलाज की सुविधा प्राप्त कर सकता है। उन्होने युवाओं के रोजगार की चर्चा करते हुये कहा कि सरकार कौशल विकास मिशन के माध्यम से नौजवानों को तकनीकी प्रशिक्षण देकर स्टार्टअप योजना के अन्तर्गत बैंक ऋण उपलब्ध कराकर रोजगार सृजन कर रही है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के माध्यम से किसानों को दैवीय आपदा में होने वाले नुकसानों से सुरक्षा प्रदान की गयी है। प्रदेश के सांस्कृतिक वैभव को पुर्नस्थापित करते हुये विकास किया जा रहा है। उन्होने कहा कि सरकार की नीति अपराध और हिंसा के विरूद्ध जीरो टालरेन्स की है, किसी भी अपराधी और हिंसा में लिप्त व्यक्ति को किसी भी कीमत पर बख्शा नही जायेगा। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा चलायी जा रही जनहित की योजनायें जन–जन तक पहुँचने से आम आदमी के जीवन स्तर में बदलाव आया है।

भू-जल संरक्षण, संवर्धन रोजगार देगा ''अमृत सरोवर''

इस धरती पर मानव सहित जीव–जन्तुओं, पेड–पौधे के लिए पानी की कितनी आवश्यकता है,यह हम सभी जानते है। कि ब्रहमाण्ड के जिन ग्रहों पर पानी है, उसी ग्रह पर जीवन है। पृथ्वी पर विचरण करने वाले सभी जीव–जन्तु, पेड़–पौधो की हरियाली, रमणीयता, प्राकृतिक सौन्दर्य जल पर ही निर्भर है। जल हाइड्रोजन के दो और ऑक्सीजन के एक अणु से मिलकर बनता है। पानी मनुष्य पशु–पक्षी, जीव–जन्तु के पीने, घरेलू उपयोग, कृषि, उद्योगों के लिए अति आवश्यक है। पृथ्वी पर दो तिहाई हिस्से में पानी है, उसमें मात्र 2.7 प्रतिशत जल ही ऐसे रूप में है,जिसका पूरी दुनिया के लोग उपयोग में लाते है। जल का उपयोग प्रत्येक दिन बड़ी मात्रा में विभिन्न कार्यो के निर्माण, कृषि उत्पादन, कल कारखानों, पीने आदि विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है। विभिन्न कार्यो के लिए प्रतिदिन भारी मात्रा में जल का उपयोग, दोहन हो रहा है, जिससें जल स्रोत सूखते जा रहे है और भू–जल स्तर नीचे चला जा रहा है। इसलिए वर्षा जल को संरक्षित करना अति आवश्यक हो गया है।

पूरे देश में आजादी के 75वें वर्ष के सुअवसर पर आजादी का ''अमृत महोत्सव'' मनाया जा रहा है ऐसे में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भू–जल की कमी दूर करने, वर्षा जल के संरक्षण, संर्वधन एवं भण्डारण हेतु 24 अप्रैल 2022 को अमृत सरोवर योजना का पूरे देश में शुभारम्भ किया है। इस योजना के अन्तर्गत देश के प्रत्येक जिले में 75–75 अमृत सरोवर का विकास किया जायेगा।देश के मा0 प्रधानमंत्री जी द्वारा संचालित कार्यक्रमों में यह योजना बहुत ही कल्याणकारी योजना है जो जल संरक्षण के साथ–साथ पर्यावरण को संतुलित करने पशु–पक्षियों, जीवों को पानी पाने एवं ग्राणीण प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाये रखने व ग्रामीण रोजगार सृजन में सहायक होगी।

अमृत सरोवर योजनान्तर्गत बनाये जा रहे, तालाबों का मुख्य उद्देश्य गॉवों के तालाबों को पुनर्जीवित करना, उसका सौन्दर्यीकरण कर पर्यटन के रूप में विकसित करना और गिरते हुये भूजल के स्तर को वर्षा जल का संचयन कर भू–जल स्तर को बढ़ाना है। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के निर्देश पर उत्तर प्रदेश में प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में 75 अमृत सरोवर के साथ–साथ प्रत्येक ग्राम पंचायत में अब दो–दो अमृत सरोवरो का विकास किया जायेगा। प्रत्येक ग्राम पंचायतों में अमृत सरोवरो का चिन्हांकन किया जा रहा है। अब तक हजारो तालाबों को चिन्हित कर व कार्ययोजना बना कर कार्य आरम्भ कर दिया गया है। अमृत सरोवरो के विकास का कार्य ग्राम पंचायतों, क्षेत्र पंचायतों व जिला पंचायतों को केन्द्रीय वित्त आयोग (टाइड़/अनटाइड़) राज्य वित्त आयोग व मनरेगा में प्राप्त होने वाली धनराशि से कराया जायेगा।

प्रदेश में बनाये जा रहे अमृत सरोवर को इस मानक से बनाया जा रहा है कि उसमें वर्ष भर जल की उपलब्धता बनी रहें। अमृत सरोवर का न्यूनतम रकबा 1.00 एकड से कम न हो और सरोवर के तटबन्ध पर आवश्यकतानुसार वॉकिंग पथ विकसित किया जायेगा। साथ ही उचित स्थान पर बैठने के लिए बेंच की भी स्थापना की जायेगी। जिससे ग्रामीण सुबह–शाम सैर करने के लिए इसका उपयोग कर सके। अमृत सरोवर में लम्बाई एवं गहराई तक सीढियों का भी निर्माण किया जायेगा। अमृत सरोवर के किनारे, आस–पास परम्परागत नीम, पीपल, बरगद, कटहल, जामुन, सहजन पाकड़, महुआ बेल आदि के पौधे भी लगाये जायेगे। जिससे भविष्य के लिए घनी छाया भी ग्रामीणों, पर्यटकों को मिले। अमृत सरोवरो के चयन में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों, आजादी के बाद के शहीदों के गॉवो को वरीयता दी गई है। अमृत सरोवरों के उचित स्थान पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा रोहण की भी व्यवस्था की जायेगी, जिससे राष्ट्रीय पर्वों पर गॉव के लोग झण्ड़ारोहण कार्यक्रम कर सके।

प्रदेश में बनाये जा रहें अमृत सरोवर के निर्माण में यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि किसी भी दशा में गॉव का गन्दा पानी गॉव की नालियों से होता हुआ सरोवर में न पहुँचे। अमृत सरोवर में गन्दा जल न जाये, इसके लिए डायबर्जन नाली/नाला का निर्माण किया जा रहा है।वर्षा जल अमृत सरोवर में आये इसके लिए आवश्यक इनलेट की व्यवस्था की जा रही है। सरोवर में साफ पानी ही अन्दर जाय, इसके लिए पानी के इन्ट्री प्वाइन्ट पर आवश्यक स्क्रीन एवं सिल्ट चैम्बर की व्यवस्था की जा रही है। अमृत सरोवर में क्षमता से अधिक पानी आने पर जल निकासी की भी समुचित व्यवस्था बनाई जा रही है। सरोवर के किनारे/आस–पास लगाये गये पौधो की सुरक्षा हेतु आवश्यक बाड़ भी लगाया जायेगा। अमृत सरोवर के रख रखाव की जिम्मेदारी सम्बन्धित ग्राम पंचायत की होगी। ग्राम पंचायत ग्रामवासियों व स्वयं सहायता समूहों से सहयोग ले सकती हैं।

अमृत सरोवर के विकास/निर्माण से प्रदेश के लाखों परिवारों को रोजगार मिलेगा। मनरेगा के अन्तर्गत करोड़ो मानव दिवस सृजित होगें और मनरेगा मजदूरो को लगातार काम मिल रहा है। जिससे उनको आर्थिक परेशानी नही होगी। अमृत सरोवर को रोजगार परक बनाने के लिए भविष्य में अन्य उपयोग में भी लाया जा सकता है।

योग ज्ञान, कर्म और भक्ति का उत्कृष्ट मिश्रण ---

– मीना चौबे

आज की तेज रफ्तार दुनिया में मन की शांति बहुत आवश्यक है, जो हमें योग से मिलती है |"योग ज्ञान, कर्म और भक्ति का उत्कृष्ट मिश्रण है |

आज पूरी दुनिया में कई देशों में योग को स्वास्थ्य लाभ के लिए अहम जरिया माना जा रहा है | भारत की तरह वहां भी योग के लिए योगिक गुरु के माध्यम से लगातार इसका प्रसार होता जा रहा है |अभी दो दिन पूर्व पूरी दुनिया में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया, भारत की वजह से ही योग को इतना सम्मान मिला है |

जैसा कि हमसब जानते है कि योग को अंतरराष्ट्रीय दिवस के रूप में पहचान दिलाने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी क्या भूमिका रही है, ऐसे में एक बार पुनः हम स्मरण कर जानने का प्रयास करते है कि आखिर किस तरह से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाने लगा |

तो हमें ध्यान में आता है कि सबसे पहले 2014 में प्रधान मंत्री मोदी ने इसका प्रस्ताव रखा जिसके बाद योग को अभूतपूर्व पहचान मिली |2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद 21 जून को योग दिवस के रूप में मनाने का विचार पहली बार सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण के दौरान प्रस्तावित किया, इसके बाद इस पर कार्रवाई शुरू हुई |

इस दौरान उन्होंने कहा, 'योग हमारी पुरातन पारम्परिक अमूल्य देन है,योग मन व शरीर, विचार व कर्म, संयम व उपलब्धि की एकात्मकता का तथा मानव व प्रकृति के बीच सामंजस्य का मूर्त रूप है,यह स्वास्थ्य व कल्याण का समग्र दृष्टिकोण है,योग केवल व्यायाम भर न होकर अपने आप से तथा विश्व व प्रकृति के साथ तादम्य को प्राप्त करने का माध्यम है |यह हमारी जीवन शैली में परिवर्तन लाकर और हम में जागरूकता उत्पन्न करके जलवायु परिवर्तन से लड़ने में सहायक हो सकता है आइए हम एक 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' को आरंभ करने की दिशा में कार्य करें | उनके इस आह्वान पर कई देशों ने अपनी सहमति प्रदान की इसके बाद प्रपोजल का ड्राफ्ट भारत के स्थायी प्रतिनिधि अशोक कुमार मुखर्जी की ओर से दिसंबर 2014 में न्छळ। में प्रस्तुत किया गया |यह न्छळ। के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था क्योंकि मसौदे को इसके सदस्य राज्यों से समर्थन मिला |संयुक्त राष्ट्र महासभा के कुल 193 सदस्यों में से 177 प्रायोजक देशों की आम सहमति से प्रस्ताव को मंजूरी दी गई ,इसके बाद प्रधान मंत्री मोदी ने दिल्ली के विज्ञान भवन में पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह में अपने भाषण के दौरान कहा कि मुझे नहीं पता था कि हमारे प्रस्ताव को इस तरह से अभूतपूर्व प्रतिक्रिया मिलेगी | योग के लिए 21जून तय करने के पीछे कारण के पीछे कहा जाता है कि 21 जून साल का सबसे लंबा दिन होता है इस दिन को ग्रीष्म श्रमिक संक्रांति के रूप में जाना जाता है,और योग के दृष्टि से इसका विशेष महत्व है साथ ही माना जाता है कि शिव ने इसी दिन शेष मानवता को योग का ज्ञान देना शुरू किया था यह वह दिन था जब वे योग के आदि गुरु बने |और अब भारत के नेतृत्वकर्ता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत को विश्वगुरु के रूप में पुनः प्रतिस्थापित कर रहे है यही नये भारत का आगाज है | प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी नए भारत के निर्माण की ओर अग्रसर है |

सैनापत्यं च राज्य च दण्डनेतृत्वमेव च...

मनुस्मृति के इस लोक को बहुत बचपन से हमें याद कराया गया था जिसकी यथार्थता का अनुभव मुझे आज के वर्तमान परिदृश्य में उत्तर प्रदेश व देश की स्थिति को देखकर आपके समक्ष लिखते समय ही हुआ वैसे वस्तुतः यह एक दृष्टि है जो चारों वेदों के चारों वेदों के अंतर्गत धनुर्वेद का आता है पर उसकी क्या आवश्यकता है इसका वास्तविक ज्ञान तो मुझे इन्हीं दिनों हुआ मनु महाराज का एक–एक शब्द कितना बहुमूल्य है यह शब्दों में नहीं आंका जा सकता,धनुर्वेद संहिता में लिखित "गौ ब्राह्मण साधु वेद संरक्षणाय" यानी कि दुष्टों आतताइयों शत्रुओं आदि से राष्ट्र सहित वेद गौ, ब्राह्मण, साधु (सज्जन) का संरक्षण तथा धर्मपूर्वक प्रजा का पालन करना, अर्थात देश व प्रदेश का नेतृत्वकर्ता उस प्रसिद्ध वीर धनुर्धर की भांति होता है ,जिससे शत्रु व आक्रांता ऐसे दूर भागते है जैसे सिंह की उपस्थिति में अन्य मृगादि,मेरे धनुष या धनुर्धर लिखने का आशय धनुष ही नही वे सभी युद्धोपकरण रक्षा के साधन बुलडोजर सहित इसमें समाहित है जिससे राष्ट्र व समाज की रक्षा होती हो । वर्तमान परिपेक्ष्य में मुझे यह उद्घृत करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि केंद्र के नेतृत्वकर्ता चाहे नरेंद्र मोदी हो या उत्तर प्रदेश के नेतृत्वकर्ता योगी आदित्यनाथ ,अपने नागरिकों के रक्षार्थ एक तरफ अंत्योदय लक्ष्य के साथ "गांव, गरीब,किसान, महिला, बच्चा, वृद्ध व जवान" सभी के उन्नयन के लिए विभिन्न लोककल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से उनके कठिन जीवन को सहज सुखद बना रहे है, तो दूसरी तरफ इंफ्रास्ट्रक्चर से देश को विकास के पथ पर अग्रसर कर रहे है, साथ ही प्रदेश व देश पर भयाक्रांत कर कुदृष्टि डालने वाले आतताइयों पर अपनी प्रत्यंचा चढ़ा कर उन्हें होश में रहकर देश प्रथम का मंत्र दे रहे है।

महर्षि पतंजलि 'अष्टांग योग'

– साधक राजकुमार

भारतीय छः आस्तिक दर्शनों ''षड्दर्शन'' में योगदर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है। कालान्तर में योग की अनेक शाखाएँ विकसित हुई जिन्होंने बड़े व्यापक रूप में सभी भारतीय पंथों, संप्रदायों और साधनाओं पर प्रभाव डाला। इसमें सबसे प्राचीन महर्षि पतंजलि का योग दर्शन है। जिसमें उन्होंने अष्टां योग का उल्लेख किया है। इसमें सोलहशील का वृहद दर्शन है जो व्यक्ति निर्माण का मूल है।

"चित्तवृत्ति निरोध" को योग मानकर यम, नियम, आसन आदि योग का मूल सिद्धांत उपस्थित किये गये हैं। प्रत्यक्ष रूप में हठयोग, राजयोग और ज्ञानयोग तीनों का मौलिक स्वरूप यहाँ मिल जाता है। इस पर भी अनेक भाष्य लिखे गये हैं। आसन, प्राणायाम, समाधि आदि विवेचना और व्याख्या की प्रेरणा लेकर बहुत से स्वतंत्र ग्रंथों की भी रचना हुई।

योग दर्शनकार पतंजलि ने आत्मा और जगत् के संबंध में सांख्य दर्शन के सिद्धांतों का ही प्रतिपादन और समर्थन किया है। उन्होंने भी वही पचीस तत्त्व माने हैं, जो सांख्यकार ने माने हैं। इनमें विशेषता यह है कि इन्होंने कपिल की अपेक्षा एक और छब्बीसवाँ तत्त्व 'पुरुषविशेष' या ईश्वर भी माना है।

पतंजलि का योगदर्शन, समाधि, साधन, विभूति और कैवल्य इन चार पादों या भागों में विभक्त है। समाधिपाद में यह बतलाया गया है कि योग के उद्देश्य और लक्षण क्या हैं और उसका साधन किस प्रकार होता है। साधनपाद में क्लेश, कर्मविपाक और कर्मफल आदि का विवेचन है। विभूतिपाद में यह बतलाया गया है कि योग के अंग क्या हैं, उसका परिणाम क्या होता है और उसके द्वारा अणिमा, महिमा आदि सिद्धियों की किस प्रकार प्राप्ति होती है। कैवल्यपाद में कैवल्य या मोक्ष का विवेचन किया गया है। संक्षेप में योग दर्शन का मत यह है कि मनुष्य को अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच प्रकार के क्लेश होते हैं, और उसे कर्म के फलों के अनुसार जन्म लेकर आयु व्यतीत करनी पड़ती है तथा भोग भोगना पड़ता है। पतंजलि ने इन सबसे बचने और मोक्ष प्राप्त करने का उपाय योग बतलाया है और कहा है कि क्रमशः योग के अंगों का साधन करते हुए मनुष्य सिद्ध हो जाता है और अंत में मोक्ष प्राप्त कर लेता है। ईश्वर के संबंध में पतंजलि का मत है कि वह नित्यमुक्त, एक, अद्वितीय और तीनों कालों से अतीत है और देवताओं तथा ऋषियों आदि को उसी से ज्ञान प्राप्त होता है। योगदर्शन में संसार को दु:खमय और हेय माना गया है। पुरुष या जीवात्मा के मोक्ष के लिये वे योग को ही एकमात्र उपाय मानते हैं।

पतंजलि ने चित्त की क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, निरुद्ध और एकाग्र ये पाँच प्रकार की वृत्तियाँ मानी है, जिनका नाम उन्होंने 'चित्तभूमि' रखा है। उन्होंने कहा है कि आरंभ की तीन चित्तभूमियों में योग नहीं हो सकता, केवल अंतिम दो में हो सकता है। इन दो भूमियों में संप्रज्ञात और असंप्रज्ञात ये दो प्रकार के योग हो सकते हैं। जिस अवस्था में ध्येय का रूप प्रत्यक्ष रहता हो, उसे संप्रज्ञात कहते हैं। यह योग पाँच प्रकार के क्लेशों का नाश करनेवाला है। असंप्रज्ञात उस अवस्था को कहते हैं, जिसमें किसी प्रकार की वृत्ति का उदय नहीं होता अर्थात्

योगः कर्मसु कौशलम्

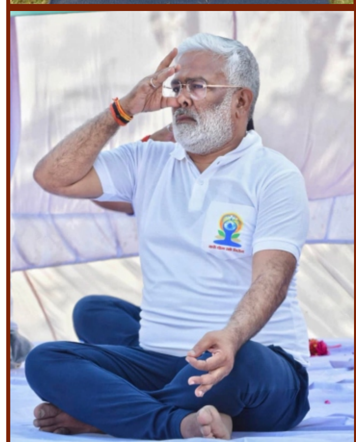

मानवता के लिए योग

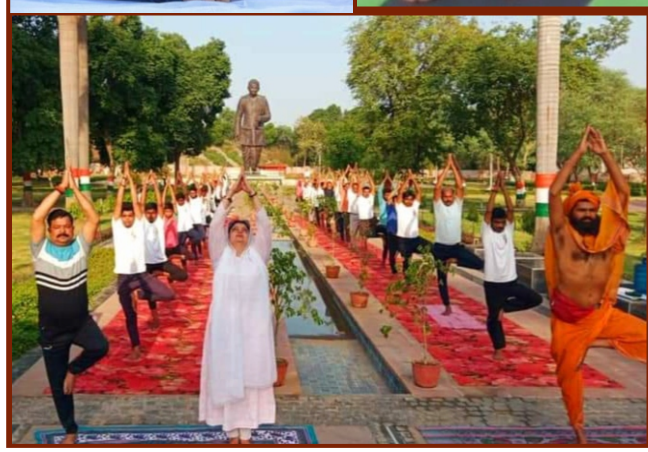

ज्ञाता और ज्ञेय का भेद नहीं रह जाता, संस्कारमात्र बचा रहता है। मनुष्य शीलवान होता है। यही योग की चरम भूमि मानी जाती है और इसकी सिद्धि हो जाने पर मोक्ष प्राप्त होता है।

योगसाधन के उपाय में यह बतलाया गया है कि पहले किसी स्थूल विषय का आधार लेकर, उसके उपरांत किसी सूक्ष्म वस्तु को लेकर और अंत में सब विषयों का परित्याग करके चलना चाहिए और अपना चित्त स्थिर करना चाहिए। चित्त की वृत्तियों को रोकने के जो उपाय बतलाए गए हैं वह इस प्रकार हैं:–

अभ्यास और वैराग्य, ईश्वर का प्रणिधान, प्राणायाम और समाधि, विषयों से विरक्ति आदि। यह भी कहा गया है कि जो लोग योग का अभ्यास करते हैं, उनमें अनेक प्रकार को विलक्षण शक्तियाँ आ जाती है जिन्हें 'विभूति' या 'सिद्धि' कहते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठों योग के अंग कहे गए हैं, और योगसिद्धि के लिये इन आठों अंगों का साधन आवश्यक कहा गया है। इनमें से प्रत्येक के अंतर्गत कई बातें हैं। कहा गया है जो व्यक्ति योग के ये आठो अंग सिद्ध कर लेता है, वह सब प्रकार के क्लेशों से छूट जाता है, अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त कर लेता है और अंत में कैवल्य (मुक्ति) का भागी बनता है। सृष्टितत्व आदि के संबंध में योग का भी प्रायः वही मत है जो सांख्य का है, इससे सांख्य को 'ज्ञानयोग' और योग को 'कर्मयोग' भी कहते हैं।

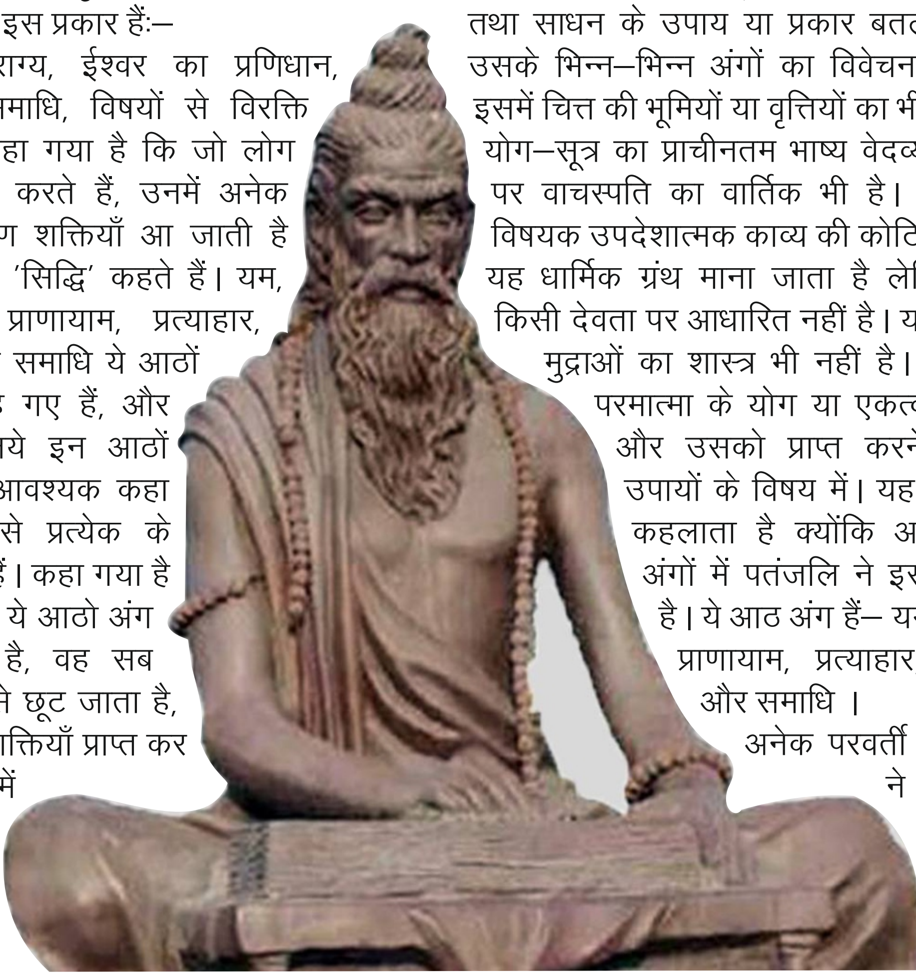

पतंजलि के सूत्रों पर सबसे प्राचीन भाष्य वेदव्यास जी का है। उस पर वाचस्पति मिश्र का वार्तिक है। विज्ञानभिक्षु का 'योगसारसंग्रह' भी योग का एक प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है।

पीछे से योगशास्त्र में तंत्र का बहुत सा मेल मिला और 'कायव्यूह' का बहुत विस्तार किया गया, जिसके अनुसार शरीर के अंदर अनेक प्रकार के चक्र आदि कल्पित किए गए। क्रियाओं का भी अधिक विस्तार हुआ और हठयोग की एक अलग शाखा निकली; जिसमें नेति, धौति, वस्ति आदि षट्कर्म तथा नाड़ीशोधन आदि का वर्णन किया गया। शिवसंहिता, हठयोगप्रदीपिका, घेरण्डसंहिता आदि हठयोग के ग्रंथ है। हठयोग के बड़े भारी आचार्य मत्स्येंद्रनाथ (मछंदरनाथ) और उनके शिष्य गोरखनाथ हुए हैं।

इन पादों में योग अर्थात् ईश्वर–प्राप्ति के उद्देश्य, लक्षण तथा साधन के उपाय या प्रकार बतलाये गये हैं और उसके भिन्न–भिन्न अंगों का विवेचन किया गया है। इसमें चित्त की भूमियों या वृत्तियों का भी विवेचन है। इस योग–सूत्र का प्राचीनतम भाष्य वेदव्यास का है जिस पर वाचस्पति का वार्तिक भी है। योगशास्त्र नीति विषयक उपदेशात्मक काव्य की कोटि में आता है।

यह धार्मिक ग्रंथ माना जाता है लेकिन इसका धर्म किसी देवता पर आधारित नहीं है। यह शारीरिक योग मुद्राओं का शास्त्र भी नहीं है। यह आत्मा और परमात्मा के योग या एकत्व के विषय में है और उसको प्राप्त करने के नियमों व उपायों के विषय में। यह अष्टांग योग भी कहलाता है क्योंकि अष्ट अर्थात् आठ अंगों में पतंजलि ने इसकी व्याख्या की है। ये आठ अंग हैं– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।

अनेक परवर्ती धार्मिक व्यक्तियों ने इनपर टीका की और इस शास्त्र के विकास में योगदान किया। विशेष रूप से जैन धर्म के हेमचंद्राचार्य ने अपभ्रंश से निकलती हुई हिंदी में इसको वर्णित करते हुए बड़े संप्रदाय की स्थापना की। उनके संप्रदाय के अनेक मूलतत्व पतंजलति योगसूत्र से लिए गए हैं।

अष्टाङ्ग योग – योग के आठ अंग

महर्षि पतंजलि ने योग को 'चित्त की वृत्तियों के निरोध' के रूप में परिभाषित किया है। योगसूत्र में उन्होंने पूर्ण कल्याण तथा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शुद्धि

के लिए आठ अंगों वाले योग का एक मार्ग विस्तार से बताया है। अष्टांग, आठ अंगों वाले, योग को आठ अलग–अलग चरणों वाला मार्ग नहीं समझना चाहिए; यह आठ आयामों वाला मार्ग है जिसमें आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। योग के ये आठ अंग हैं योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्ति राविवेकख्यातेः। योग के अंगों के सतत सेवन करने से चित्तवृत्तियों का निरोध हो जाता है, चित्त का विक्षेप नहीं होता। अविद्या–अस्मिता इत्यादि क्लेशों की निवृत्ति हो जाने से ज्ञान के आलोक की प्राप्ति होती है । योग के अंग जो आगे वर्णन किये जाने वाले है, उन योग–अंगों के अनुष्ठान से, ज्ञानपूर्वक अभ्यास से, सतत सेवन करने से विवेक ज्ञान के उत्पन्न होने तक सभी प्रकार की अशुद्धियों का विनाश हो जाने से अर्थात् सत्वगुण बहुल चित्त के ज्ञान का आवरण करने वाले अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश रुप पञ्चविध क्लेश रूपी अशुद्धियों के अभाव हो जाने से जो ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है अर्थात् विवेक ज्ञान के उदय होने तक क्रमशः रजोगुण एवं तमोगुण से अनभिभूत प्रकाशात्मक सत्त्वगुणविशिंष्ट चित्त का परिणाम होता है अर्थात् योगाङ्गों के अनुष्ठान से पञ्चविध क्लेशों का अभाव हो जाता है और दोष रहित विमल चित्त का केवल सात्त्विक परिणाम होता है। इस तरह ज्ञान के आलोक की प्राप्ति होती है। उस विवेकख्याति (प्रकृति पुरुष विवेक ज्ञान का) योगाङ्ग के अभ्यास से सात्त्विक परिणाम को प्राप्त होने वाला चित्त कारण है ।

1. यम : पांच सामाजिक नैतिकता

(क) अहिंसा – शब्दों से, विचारों से और कर्मो से किसी को हानि नहीं पहुँचाना। इन पञ्चविध यमों में शरीर से प्राण को वियुक्त, पृथक् करने के उद्देश्य से किया गया कार्य या चेष्टा हिंसा है और वहीं हिंसा सभी अनर्थों का मूल कारण है। उसी हिंसा का अभाव अहिंसा है। सभी प्रकार से ही हिंसा का परित्याग के योग्य, हिंसा के त्याज्य होने के कारण सबसे पहले उस हिंसा के अभावरूपी अहिंसा का उल्लेख किया गया है।

(ख) सत्य – विचारों में सत्यता, परम–सत्य में स्थित रहना। वाणी तथा मन का अर्थ के अनुरूप रहना अर्थात् अर्थ का जैसे स्वरूप है उसी के अनुसार वाणी से कहना तथा मन से वैसा मनन करना ही सत्य है।

(ग) अस्तेय – चोर–प्रवृति का न होना। दूसरे के धन का अपहरण करना ही स्तेय या चोरी हैं। उस स्तेय का अभाव, दूसरे के धन, सत्त्व का अपहरण न करना ही अस्तेय है।

(घ) ब्रह्मचर्य – दो अर्थ हैं:

' चेतना को ब्रह्म के ज्ञान में स्थिर करना

' सभी इन्द्रिय–जनित सुखों में संयम बरतना। मुख्यतः उपस्थ इन्द्रिय के संयम को ब्रह्मचर्य कहते हैं।

(च) अपरिग्रह – आवश्यकता से अधिक संचय नहीं करना और दूसरों की वस्तुओं की इच्छा नहीं करना। भोग के साधनों का स्वीकार न करना, ग्रहण न करना ही अपरिग्रह है।

2. नियमः पाँच व्यक्तिगत नैतिकता

(क) शौच – शरीर और मन की शुद्धि। अर्थात् पवित्रता दो प्रकार की होती हैः– बाहरी पवित्रता और आन्तरिक शौच (अन्तःकरण की पवित्रता/शुद्धता)। मिट्टी, जल इत्यादि से शरीर इत्यादि के अङ्गों का धोना, स्वच्छ करना बाह्य स्वच्छता, पवित्रता है।

(ख) सन्तोष – सन्तुष्ट और प्रसन्न रहना। तुष्टि ही सन्तोष है। अर्थात् स्वकर्तव्य का पालन करते हुये, प्रबन्ध के ही अनुसार प्राप्त फल से सन्तुष्ट हो जाना, किसी प्रकार की तृष्णा का न होना ही सन्तोष है।

(ग) तप – स्वयं से अनुशासित रहना। दूसरे शास्त्रों में वर्णन किये गये चान्द्रायण इत्यादि तप है।

(घ) स्वाध्याय – आत्मचिंतन करना। प्रणव पूर्वक, ओंकार के साथ मन्त्रों का जप, पाठ करना स्वाध्याय है।

(च) ईश्वर–प्रणिधान – ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, पूर्ण श्रद्धा। सभी कर्मों का फल की अभिलाषा, कामना न रखते हुए उस सर्वश्रेष्ठ गुरु, ईश्वर में समर्पित करना ईश्वरप्राणिधान है।

3. आसनः योगासनों द्वारा शारीरिक नियंत्रण।

4. प्राणायामः श्वास–लेने सम्बन्धी खास तकनीकों द्वारा प्राण पर नियंत्रण

5. प्रत्याहारः इन्द्रियों को अंतर्मुखी करना

6. धारणाः एकाग्रचित्त होना

7. ध्यानः निरंतर ध्यान

8. समाधिः आत्मा से जुड़ना, शब्दों से परे परम–चैतन्य की अवस्था

इन योग साधना से साधक सुशील बन समाज के सुमंगल के लिए कार्य करता है। जिससे ''सुशीलं जगद्ये न नम्रम भवेत' का संकल्प पूर्ण होता है। सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः की संकल्पना साकार होती है।

पुण्य तिथि विशेष

डॉ. मुखर्जी के सपनों का भारत

व्यर्थ नही जाएगा डॉ. मुखर्जी का बलिदान...

– शिव प्रकाश

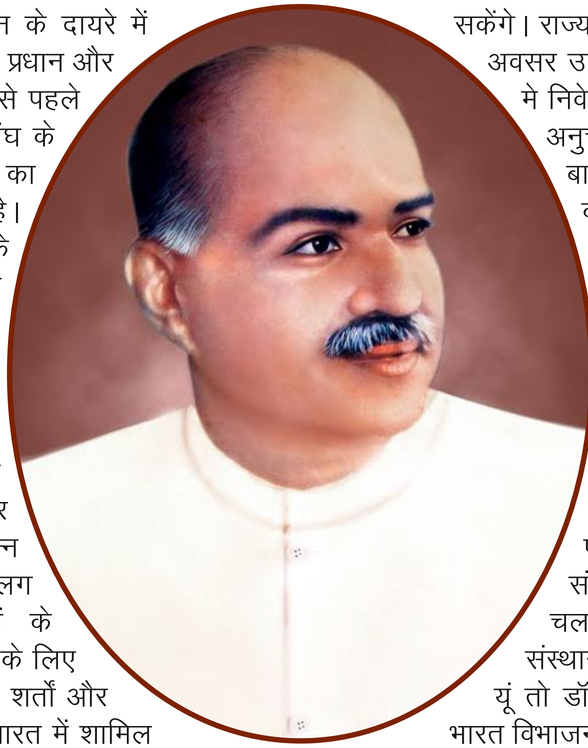

जम्मू कश्मीर को भारतीय संविधान के दायरे में लाने और एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान (झंडा) के विरोध में सबसे पहले आवाज उठाने वाले भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का 23 जून को बलिदान दिवस है। उनका यह स्वप्न स्वतंत्रता प्राप्ति के 70 वर्ष बाद तब पूरा हुआ जब हम सबके प्रिय नेता माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने अगस्त 2019 में संसद में संविधान के अनुच्छेद 370 एवं 35–A को समाप्त करने का बिल पारित कराया। इसके बाद ही जम्मू कश्मीर भारत देश का सही मायनों में अभिन्न अंग बना। विशेष राज्य का दर्जा, अलग संविधान, देश के अन्य प्रदेशों के नागरिकों के जम्मू कश्मीर में प्रवेश के लिए परमिट की आवश्यकता जैसी जिन शर्तों और नियमों के साथ जम्मू कश्मीर को भारत में शामिल किया गया था, डॉ. मुखर्जी प्रारंभ से ही उसके विरोध में थे। उन्होंने इसके लिए बाकायदा जम्मू कश्मीर जाकर अपना विरोध दर्ज कराया। लेकिन चाहकर भी उनका यह स्वप्न उनके जीते जी पूरा नहीं हो पाया और रहस्यमय परिस्थितियों में 23 जून 1953 को उनकी मृत्यु हो गई। डॉ. मुखर्जी को जम्मू कश्मीर एवं देश की अखंडता के लिए बलिदान देने वाले पहले व्यक्ति के तौर पर जाना गया। इसीलिए देश उनकी पुण्यतिथि को बलिदान दिवस के रूप में मनाता है।

भारतीय संविधान के दायरे में आने के बाद से जम्मू कश्मीर की परिस्थितियों में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से सरकारों ने प्रदेश में कृत्रिम सामान्यता बनाये रखी। वास्तविक अर्थो में जम्मू कश्मीर की स्थिति अनुच्छेद 370 के प्रावधानों की समाप्ति के बाद ही सामान्य हुई है। अब जम्मू कश्मीर का सही मायनों में विकास संभव होगा। केंद्र की भाजपा सरकार ने भी राज्य के विकास को लेकर अपनी प्रतिबद्धता ज़ाहिर की है। वित्त वर्ष 2022–23 के लिए केंद्र की भाजपा सरकार ने राज्य के लिए 1.42 लाख करोड़ रुपये का बजट संसद से पारित कराया है जिससे जम्मू कश्मीर में विकास के कार्य पिछले वर्षों के मुक़ाबले ज्यादा तेजी से पूरे किये जा सकेंगे। राज्य में अब न केवल रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो रहे हैं बल्कि उद्योग जगत मे निवेश के लिए भी उत्साह दिखा रहा है। अनुच्छेद 370 के प्रावधानों की समाप्ति के बाद प्रदेश में अब केंद्र के क़रीब 890 क़ानून लागू हो गए हैं। यही नहीं अब प्रदेश के लोग संविधान के तहत मिलने वाले आरक्षण के भी हक़दार हो गए हैं जिनसे उनके लिए विकास और समृद्धि के रास्ते खुले हैं। पर्यटकों की संख्या मे वृद्धि हुई है। पंचायतों को सीधे 2200 करोड़ का बजट स्वीकृत हुआ है। स्वास्थ्य सेवाओ के विकास के लिए 2 नए एम्स, 6 नए मेडिकल कॉलेज, 2 कैंसर संस्थान एवं 15 नर्सिंग कौलेज पर कार्य चल रहा है। युवा, पुलिस एवं अन्य संस्थानों मे रोजगार प्राप्त कर रहे है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से सरकारों ने प्रदेश में कृत्रिम सामान्यता बनाये रखी। वास्तविक अर्थों में जम्मू कश्मीर की स्थिति अनुच्छेद 370 के प्रावधानों की समाप्ति के बाद ही सामान्य हुई है।

यूं तो डॉ. मुखर्जी स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही भारत विभाजन के खिलाफ थे और उन्होंने संविधान सभा की बैठकों में भी अपने विचारों को काफी प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया था। लेकिन जम्मू कश्मीर के भारत में विलय को लेकर कांग्रेस नेताओं और तत्कालीन सरकार की सोच के साथ वे कभी एकमत नहीं थे। वे पहले ही दिन से जम्मू कश्मीर को भारतीय संविधान की सीमाओं के अंतर्गत लाने के पक्षधर थे। इसे संघर्ष की सीमा तक ले जाने की शुरुआत अप्रैल 1952 में तब हुई जब जम्मू कश्मीर की प्रजा परिषद पार्टी के नेता प० प्रेमनाथ डोगरा नई दिल्ली में उनसे मुलाकात करने आए। डोगरा ने डॉ. मुखर्जी से राज्य में चल रहे इस आंदोलन में भाग लेने का आग्रह किया। डॉ. मुखर्जी ने डोगरा को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से मिलकर अपना पक्ष रखने को कहा। लेकिन इसे विडंबना कहें या कांग्रेस की तत्कालीन सरकार का अड़ियल रवैया, डोगरा को अपनी बात रखने के लिए नेहरू से समय ही नहीं मिला।

डॉ. मुखर्जी अपने सिद्धांतों को लेकर अटल थे। उन्होंने जम्मू कश्मीर को लेकर अपने विचारों पर कभी समझौता नहीं किया और प्रजा परिषद पार्टी के बुलावे पर अगस्त 1952 में वह जम्मू में एक सभा में शामिल हुए और 'एक देश में दो विधान दो प्रधान नहीं चलेंगे, नहीं चलेंगे' का नारा दिया। डॉ. मुखर्जी को केवल

जम्मू कश्मीर में भारतीय संविधान लागू करने की नीति के समर्थक के तौर पर ही नहीं देखा जाना चाहिए। शिक्षा, समाज, संस्कृति और राजनीति में भी उनका योगदान बेहद उल्लेखनीय रहा है।

उनकी राजनीतिक यात्रा कलकत्ता विश्वविद्यालय क्षेत्र से 1929 में विधान परिषद से प्रारंभ हुई द्य बंगाल के हितों की रक्षा के लिए वे फजलुल सरकार में वित्त मंत्री रहे द्य भारत सरकार के उद्योग मंत्री रहते हुए उन्होंने 6 अप्रैल 1948 को उद्योग नीति लायीद्य तीन भागों में उद्योगों का विभाजन कर भारत में उद्योगों का विकास उनका प्रयास था द्य औद्योगिक वित्त विकास निगम की स्थापना, ऑल इंडिया हैंडीक्राफ्ट, ऑल इंडिया हैंडलूम बोर्ड, खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, चितरंजन रेलवे कारखाना, हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट लिमिटेड, दामोदर नदी घाटी बहुउद्देशीय परियोजना सभी डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के संकल्प के साकार रूप है। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु जी के विभाजन के समय, पाकिस्तान एवं पूर्वी पाकिस्तान पर विफल नीति के विरोध में उद्योग मंत्री से त्यागपत्र देकर वे भारत में आए लाखों शरणार्थियों की सेवा में जुट गए। हमें कांग्रेस के राष्ट्रवादी विकल्प की आवश्यकता है, इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए उन्होंने भारतीय जनसंघ की स्थापना मे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी द्य डॉ० श्यामा प्रसाद जी जनसंघ के प्रथम अध्यक्ष बने द्यप्रथम लोकसभा चुनाव मे साउथ कोलकाता से सांसद सदस्य भी चुने गए।

“मैं ऐसे व्यक्ति बनाना चाहता हूं जो नए बंगाल के योग्य नेता बने।”

वर्ष 1934 से 1938 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति होने का श्रेय भी उनके ही नाम है। इसी पद पर उन्होंने दो कार्यकाल रहते हुए कलकत्ता विश्वविद्यालय को प्रगति की ऊंचाइयों पर पहुंचाया।ब्रिटिश इंडिया के प्रतीक 'ब्रिटिश मोहर' को बदलकर उस स्थान पर 'खिलते हुए कमल में श्री अंकित' कलकत्ता विश्वविद्यालय का प्रतीक चिन्ह बनाया। उनकी शिक्षा दृष्टि उनके ही शब्दों में "मैं ऐसे व्यक्ति बनाना चाहता हूं जो नए बंगाल के योग्य नेता बने।" इसी उद्देश्य से उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय में अनेक नए पाठ्यक्रम प्रारंभ किए।

साल 1943 में आए भीषण अकाल में सरकार के निकम्मे एवं द्वेषपूर्ण व्यवहार को समाज के सामने लाते हुए स्वयं सेवा के मैदान में उतर गए । बंगाल रिलीफ कमेटी बनाकर, साथ ही तत्कालीन अन्य सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं को उन्होंने साथ लेकर यह सेवा कार्य किया।मुफ्त रसोई, निशुल्क अनाज वितरण, सस्ती कैंटीन, अनाज की दुकाने, आवास, वृद्धों एवं बच्चों के लिए दूध एवं दवाइयां वितरण कमेटी के द्वारा हुआ।देश के विभाजन की त्रासदी को श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपनी आंखों से देखा था। बंगाल के कलकत्ता, नोआखाली सहित अनेक स्थानों के दंगो में मानवता कराह उठी थी। ग्रेट कलकत्ता के नाम से कुख्यात नरसंहार आज भी लोगों में सिहरन पैदा करता है। समाज का मनोबल बढ़ाने, उचित मार्गदर्शन करने एवं पीड़ित मानवता की सेवा करने के लिए अस्वस्थ होते हुए भी उन्होंने सभी स्थानों का प्रवास किया। भारत के विभाजन के घोर विरोधी होने के बाद भी जब उनको लगा कि यदि हमने बंगाल के विभाजन की बात नहीं की तब संपूर्ण बंगाल ही हमारे हाथ से चला जाएगा। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वे भारतीय नेताओं के साथ–साथ अंग्रेज अधिकारियों से भी मिले। आज के भारत में, बंगाल उन्हीं के संकल्प का परिणाम है। उनको नव बंगाल का 'शिल्पी' भी कहा जाता है। एकजुट भारत की उनकी इस सोच पर आगे कदम बढ़ाने में हमें 70 वर्ष से भी अधिक का समय लग गया। लेकिन आज माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के कुशल नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार डॉ. मुखर्जी की इस सोच को वास्तविकता में बदल रही है। एक भारत, श्रेष्ठ भारत के नारे के माध्यम से मोदी सरकार देश को एक सूत्र में पिरोने का काम कर रही है। जम्मू कश्मीर को भारतीय संविधान के अंतर्गत लाने के दो वर्ष पूरे होने को हैं। मोदी सरकार की नीतियों में डॉ. मुखर्जी की आकांक्षाओं की झलक स्पष्ट देखी जा सकती है। नई शिक्षा नीति को लागू करना डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की शिक्षा अभिव्यक्ति ही है द्य वह दिन दूर नहीं जब भारतीय जनसंघ, जिसने बाद में भारतीय जनता पार्टी का स्वरूप लिया, के संस्थापक डॉ. मुखर्जी की राष्ट्रीय एकता व अखंडता की भावना सशक्त होकर भारत को विश्व के श्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में स्थापित करेगी।

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री हैं)

आपातकाल की संघर्ष गाथा

आजादी के बाद भारतीय लोकतंत्र पर इन्दिरा गाँधी ने 26 जून 1975 को आन्तरिक आपातकाल लगा कर निरंकुश सत्ता के द्वारा लोकतंत्र की हत्या का प्रयास किया था। देश में हजारों छोटे बड़े कार्यकर्ताओं को जेल में ठूँस दिया गया। कांग्रेस द्वारा एकाधिकारवाद का क्रूर राजनीतिक खेल खेला गया। देश भर में लोक संघर्ष समिति के तत्वाधान में सत्याग्रह के द्वारा प्रचण्ड आन्दोलन चला। जे0पी0 के नेतृत्व में सिंहासन खाली करो की जनता आती है....के उद्घोष के साथ डट कर विरोध हुआ। कारागार के कपाट खुले। इन्दिरा गांधी पराजित हुई, लोकतंत्र की विजय हुई। जिसकी पृष्ठ भूमि कुछ ऐसी थी। 12 जून 1975 को इंदिरा गांधी को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने दोषी पाया और छह साल के लिए पद से बेदखल कर दिया। इंदिरा गांधी पर वोटरों को घूस देना, सरकारी मशीनरी का गलत इस्तेमाल, सरकारी संसाधनों का गलत इस्तेमाल जैसे 14 आरोप सिद्ध हुए लेकिन आदतन श्रीमती गांधी ने उन्हें स्वीकार न करके न्यायपालिका का उपहास किया। राज नारायण ने 1971 में रायबरेली में इंदिरा गांधी के हाथों हारने के बाद मामला दाखिल कराया था। जस्टिस जगमोहनलाल सिन्हा ने यह फैसला सुनाया था।

24 जून 1975 को सुप्रीम कोर्ट ने आदेश बरकरार रखा, लेकिन इंदिरा को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बने रहने की इजाजत दी जो कि होना भी जरुरी था क्योकि राजतन्त्र में ऐसा ही होता है।

25 जून 1975 को जयप्रकाश नारायण ने इंदिरा के न चाहते हुए भी इस्तीफा देने तक देश भर में रोज प्रदर्शन करने का आह्वाहन किया।

25 जून 1975 को राष्ट्रपति के अध्यादेश पास करने के बाद सरकार ने आपातकाल लागू कर दिया।

सितम्बर 1976 – संजय गाँधी ने देश भर में अनिवार्य पुरुष नसबंदी का आदेश दिया। इस पुरुष नसबंदी के पीछे सरकार की मंशा देश की आबादी को नियंत्रित करना था। इसके अंतर्गत लोगों की इच्छा के विरुद्ध नसबंदी कराई गयी। कार्यक्रम के कार्यान्वयन में संजय गांधी की भूमिका की सटीक सीमा विवादित है, कुछ लेखकों ने गांधी को उनके आधिकारिकता के लिए सीधे जिम्मेदार ठहराया है, और अन्य लेखकों ने उन अधिकारियों को दोषी ठहराते हुए जिन्होंने स्वयं गांधी के बजाय कार्यक्रम को लागू किया था। रुखसाना सुल्ताना एक समाजवादी थीं जो संजय गांधी के करीबी सहयोगियों में से एक होने के लिए जानी जाती थीं और उन्हें पुरानी दिल्ली के मुस्लिम क्षेत्रों में संजय गांधी के नसबंदी अभियान के नेतृत्व में बहुत कुख्याततता मिली थी।

18 जनवरी 1977– इन्दिरा गांधी ने लोकसभा भंग करते हुए घोषणा की कि मार्च मे लोकसभा के लिए आम चुनाव होंगे। सभी राजनैतिक बन्दियों को रिहा कर दिया गया।

23 मार्च – आपातकाल समाप्त

16–20 मार्च – 6ठे लोकसभा के चुनाव सम्पन्न। जनता पार्टी भारी बहुमत से सत्ता में आई। संसद में कांग्रेस के सदस्यों की संख्या ३५० से घट कर 153 पर सिमट गई और 30 वर्षों के बाद केंद्र में किसी गैर–कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ। स्वयं इंदिरा गांधी और संजय गांधी चुनाव हार गए। मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने। कांग्रेस को उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में एक भी सीट नहीं मिली।

नई सरकार ने आपातकाल के दौरान लिए गए निर्णयों की जाँच के लिए शाह आयोग गठित किया।

आज भी भारतीय राजनीति में लोकतंत्र को समाप्त करने का यह क्रूरतम् प्रयास माना जाता है।

अग्निवीरों की भर्ती प्रक्रिया शुरू

मोदी सरकार द्वारा किए जाने वाले हर सकारात्मक व्यवस्था परिवर्तन का बिना उसे ठीक से समझें ही कुछ निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा विरोध करना एक नियम सा बन गया है।

केंद्र की मोदी सरकार ने दुनिया के अन्य सैनिक मज़बूती वाले देशों की तर्ज़ पर भारत में भी सैन्य बलों को सशक्त बनाने हेतु सेना में युवाओं की भर्ती के दृष्टिकोण से एक क्रांतिकारी योजना तैयार की तथा अग्निपथ नाम से इसका एलान किया। योजना सार्वजनिक करने के कुछ घंटों के भीतर ही कुछ विपक्षी पाटियों ने इस योजना के विरोध में आग उगलना शुरू कर दिया। युवाओं को बरगला कर उन्हें सरकारी सम्पत्ति ख़ासकर रेल व बसों को आग के हवाले करने के लिए उकसाने का काम किया। मोदी सरकार की योजनाएँ कोई हवा–हवाई नहीं होतीं हैं,वे काफ़ी गहन मंथन व विचारोपरांत ही लाई जाती है तथा इसे संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञ विशेष अध्ययन के बाद ही प्रस्तुत करते हैं।इस अग्निपथ योजना को भी रिटायर्ड सैनिक अधिकारियों ने बनाया है।

यह विदित है कि चीन के पास लगभग 20 लाख से भी ज़्यादा सैनिक बल है,जबकि भारत के पास लगभग 15 लाख से भी कम सैनिक हैं। इस योजना को लाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि नियमित कैडर सैनिक और अग्निवीर की संख्या को 50–50 के अनुपात में लाना है। अग्निवीरों की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष निर्धारित है,जिस उम्र में और कोई भी नौकरी नहीं मिल सकती है, क्योंकि अन्य सभी क्षेत्रों में न्यूनतम आयु 21 वर्ष निर्धारित है। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि अधिकतम 25–26 वर्ष की आयु में जब अग्निवीर रिटायर्ड होगा तो उसके पास अनुभव के साथ–साथ साधन व कौशल दोनों होंगे। अग्निवीर की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 10 वी०पास की है, सेवा से रिटायर्ड होने पर उसे 12 वीं पास का सार्टिफिकेट दिया जाएगा तथा तीन साल के एक विशेष डिग्री कोर्स द्वारा उनके भविष्य को संवारने की व्यवस्था की गई है। चार साल बाद अग्निवीरों को 11.71 लाख रुपये सैलरी के अलावा मिलेगा। यदि कोई सैनिक सेवा के दौरान दिव्यांग हो जाता है तो उसे 25 लाख रुपये मुआवज़ा दिया जाएगा। प्रति माह न्यूनतम 30 हज़ार वेतन के अलावा अन्य भत्तों के साथ–साथ राशन, ड्रेस और ट्रेबल अलाउंस प्रमुख रूप से दिए जायेंगे, जो कर–मुक्त होंगे। यदि दुर्भाग्यवश अग्निवीर सेवा के दौरान दिवंगत हो जाता है तो उसके आश्रित को 11.71 लाख के अलावा 1करोड रुपये दिए जायेंगे। घटना के वक़्त जितने समय की नौकरी बची होगी,उसकी तनख़्वाह भी दी जाएगी।इन सब के अलावा अग्निवीरों का 48 लाख रुपये का गैर अंशदायी जीवन बीमा भी किया जाएगा। अग्निवीरों को स्किल सर्टिफिकेट दिया जायेगा तथा अपना रोज़गार शुरू करने हेतु बैंक से ऋण देने की व्यवस्था की गई है,ताकि वे नौकरी करने की बजाय अपना रोज़गार कर सुचारू रूप से जीवन–यापन कर सकें।एक इंडियन आर्मी जो अभी 39 से 44 वर्ष में रिटायर होता है,उस वक़्त उसे अपने परिवार की ज़िम्मेदारी निभाने के लिए अन्य काम मिलना बहुत ही मुश्किल होता है।

इस योजना के माध्यम से देश की युवा शक्ति को सेना में सेवा व प्रशिक्षण दोनों का अवसर मिल सकेगा। इस योजना का एक सबसे बड़ा फ़ायदा यह होगा कि सात साल के भीतर ही भारतीय सैनिकों की औसत आयु 32 वर्ष से घटकर 24–26 के बीच आ जायेगी। पूरी योजना की सही जानकारी के अभाव में ही नवयुवकों को विपक्ष बरगलाने में सफल हो रहा है। तथ्यों की जानकारी होने पर शायद ही कोई इस योजना का विरोध करेगा! क्योंकि इस योजना के कारण अग्निवीरों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। सेना ने अग्निपथ सैन्य भर्ती प्रक्रिया के तहत अग्निवीरों की सेवा के रास्ते साफ होते जा रहे हैं सेना ने अधिसूचना जारी कर दिया है। ऑनलाइन पंजीकरण शुरू हो गया है अनेक संशोधनों की सेवा सर्तों के साथ भारतीय सेना नई चुनौतियों के मुकाबला हेतु नई योजना अमली जामा पहनाना शुरू कर दिया है।

नरेन्द्र मोदी ब्लाग

"माँ" की ममता

मां, ये सिर्फ एक शब्द नहीं है। जीवन की ये वो भावना होती जिसमें स्नेह, धैर्य, विश्वास, कितना कुछ समाया होता है। दुनिया का कोई भी कोना हो, कोई भी देश हो, हर संतान के मन में सबसे अनमोल स्नेह मां के लिए होता है। मां, सिर्फ हमारा शरीर ही नहीं गढ़ती बल्कि हमारा मन, हमारा व्यक्तित्व, हमारा आत्मविश्वास भी गढ़ती है। और अपनी संतान के लिए ऐसा करते हुए वो खुद को खपा देती है, खुद को भुला देती है।

आज मैं अपनी खुशी, अपना सौभाग्य, आप सबसे साझा करना चाहता हूं। मेरी मां, हीराबा आज 18 जून को अपने सौवें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं। यानि उनका जन्म शताब्दी वर्ष प्रारंभ हो रहा है। पिताजी आज होते, तो पिछले सप्ताह वो भी 100 वर्ष के हो गए होते। यानि 2022 एक ऐसा वर्ष है जब मेरी मां का जन्मशताब्दी वर्ष प्रारंभ हो रहा है और इसी साल मेरे पिताजी का जन्मशताब्दी वर्ष पूर्ण हुआ है।

पिछले ही हफ्ते मेरे भतीजे ने गांधीनगर से मां के कुछ वीडियो भेजे हैं। घर पर सोसायटी के कुछ नौजवान लड़के आए हैं, पिताजी की तस्वीर कुर्सी पर रखी है, भजन कीर्तन चल रहा है और मां मगन होकर भजन गा रही हैं, मंजीरा बजा रही हैं। मां आज भी वैसी ही हैं। शरीर की ऊर्जा भले कम हो गई है लेकिन मन की ऊर्जा यथावत है।

वैसे हमारे यहां जन्मदिन मनाने की कोई परंपरा नहीं रही है। लेकिन परिवार में जो नई पीढ़ी के बच्चे हैं उन्होंने पिताजी के जन्मशती वर्ष में इस बार 100 पेड़ लगाए हैं।

आज मेरे जीवन में जो कुछ भी अच्छा है, मेरे व्यक्तित्व में जो कुछ भी अच्छा है, वो मां और पिताजी की ही देन है। आज जब मैं यहां दिल्ली में बैठा हूं, तो कितना कुछ पुराना याद आ रहा है।

आज मेरे जीवन में जो कुछ भी अच्छा है, मेरे व्यक्तित्व में जो कुछ भी अच्छा है, वो मां और पिताजी की ही देन है। आज जब मैं यहां दिल्ली में बैठा हूं, तो कितना कुछ पुराना याद आ रहा है।

ेरी मां जितनी सामान्य हैं, उतनी ही असाधारण भी। ठीक वैसे ही, जैसे हर मां होती है। आज जब मैं अपनी मां के बारे में लिख रहा हूं, तो पढ़ते हुए आपको भी ये लग सकता है कि अरे, मेरी मां भी तो ऐसी ही हैं, मेरी मां भी तो ऐसा ही किया करती हैं। ये पढ़ते हुए आपके मन में अपनी मां की छवि उभरेगी।

मां की तपस्या, उसकी संतान को, सही इंसान बनाती है। मां की ममता, उसकी संतान को मानवीय संवेदनाओं से भरती है। मां एक व्यक्ति नहीं है, एक व्यक्तित्व नहीं है, मां एक स्वरूप है। हमारे यहां कहते हैं, जैसा भक्त वैसा भगवान। वैसे ही अपने मन के भाव के अनुसार, हम मां के स्वरूप को अनुभव कर सकते हैं।

मेरी मां का जन्म, मेहसाणा जिले के विसनगर में हुआ था। वडनगर से ये बहुत दूर नहीं है। मेरी मां को अपनी मां यानि मेरी नानी का प्यार नसीब नहीं हुआ था। एक शताब्दी पहले आई वैश्विक महामारी का प्रभाव तब बहुत वर्षों तक रहा था। उसी महामारी ने मेरी नानी को भी मेरी मां से छीन लिया था। मां तब कुछ ही दिनों की रही होंगी। उन्हें मेरी नानी का चेहरा, उनकी गोद कुछ भी याद नहीं है। आप सोचिए, मेरी मां का बचपन मां के बिना ही बीता, वो अपनी मां से जिद नहीं कर पाईं, उनके आंचल में सिर नहीं छिपा पाईं। मां को अक्षर ज्ञान भी नसीब नहीं हुआ, उन्होंने स्कूल का दरवाजा भी नहीं देखा। उन्होंने देखी तो सिर्फ गरीबी और घर में हर तरफ अभाव।

हम आज के समय में इन स्थितियों को जोड़कर देखें तो कल्पना कर सकते हैं कि मेरी मां का बचपन कितनी मुश्किलों भरा था। शायद ईश्वर ने उनके जीवन को इसी प्रकार से गढ़ने की सोची थी। आज उन परिस्थितियों के बारे में मां सोचती हैं, तो कहती हैं कि ये ईश्वर की ही इच्छा रही होगी। लेकिन अपनी मां को खोने का, उनका चेहरा तक ना देख पाने का दर्द उन्हें आज भी है।

बचपन के संघर्षों ने मेरी मां को उम्र से बहुत पहले बड़ा कर दिया था। वो अपने परिवार में सबसे बड़ी थीं और जब शादी हुई तो भी सबसे बड़ी बहू बनीं। बचपन में जिस तरह वो अपने घर में सभी की चिंता करती थीं, सभी का ध्यान रखती थीं, सारे कामकाज की जिम्मेदारी उठाती थीं, वैसे ही जिम्मेदारियां उन्हें ससुराल में उठानी पड़ीं। इन जिम्मेदारियों के बीच, इन परेशानियों के बीच, मां हमेशा शांत मन से, हर स्थिति में परिवार को संभाले रहीं।

वडनगर के जिस घर में हम लोग रहा करते थे वो बहुत ही छोटा था। उस घर में कोई खिड़की नहीं थी, कोई बाथरूम नहीं था, कोई शौचालय नहीं था। कुल मिलाकर मिट्टी की दीवारों और खपरैल की छत से बना वो एक–डेढ़ कमरे का ढांचा ही हमारा

घर था, उसी में मां–पिताजी, हम सब भाई–बहन रहा करते थे। उस छोटे से घर में मां को खाना बनाने में कुछ सहूलियत रहे इसलिए पिताजी ने घर में बांस की फट्टी और लकड़ी के पटरों की मदद से एक मचान जैसी बनवा दी थी। वही मचान हमारे घर की रसोई थी। मां उसी पर चढ़कर खाना बनाया करती थीं और हम लोग उसी पर बैठकर खाना खाया करते थे।

सामान्य रूप से जहां अभाव रहता है, वहां तनाव भी रहता है। मेरे माता–पिता की विशेषता रही कि अभाव के बीच भी उन्होंने घर में कभी तनाव को हावी नहीं होने दिया। दोनों ने ही अपनी–अपनी जिम्मेदारियां साझा की हुईं थीं।

कोई भी मौसम हो, गर्मी हो, बारिश हो, पिताजी चार बजे भोर में घर से निकल जाया करते थे। आसपास के लोग पिताजी के कदमों की आवाज से जान जाते थे कि 4 बज गए हैं, दामोदर काका जा रहे हैं। घर से निकलकर मंदिर जाना, प्रभु दर्शन करना और फिर चाय की दुकान पर पहुंच जाना उनका नित्य कर्म रहता था।

मां भी समय की उतनी ही पाबंद थीं। उन्हें भी सुबह 4 बजे उठने की आदत थी। सुबह–सुबह ही वो बहुत सारे काम निपटा लिया करती थीं। गेहूं पीसना हो, बाजरा पीसना हो, चावल या दाल बीनना हो, सारे काम वो खुद करती थीं। काम करते हुए मां अपने कुछ पसंदीदा भजन या प्रभातियां गुनगुनाती रहती थीं। नरसी मेहता जी का एक प्रसिद्ध भजन है "जलकमल छांडी जाने बाला, स्वामी अमारो जागशे" वो उन्हें बहुत पसंद है। एक लोरी भी है, "शिवाजी नु हालरडु", मां ये भी बहुत गुनगुनाती थीं।

मां कभी अपेक्षा नहीं करती थीं कि हम भाई–बहन अपनी पढ़ाई छोड़कर उनकी मदद करें। वो कभी मदद के लिए, उनका हाथ बंटाने के लिए नहीं कहती थीं। मां को लगातार काम करते देखकर हम भाई–बहनों को खुद ही लगता था कि काम में उनका हाथ बंटाएं। मुझे तालाब में नहाने का, तालाब में तैरने का बड़ा शौक था इसलिए मैं भी घर के कपड़े लेकर उन्हें तालाब में धोने के लिए निकल जाता था। कपड़े भी धुल जाते थे और मेरा खेल भी हो जाता था।

घर चलाने के लिए दो चार पैसे ज्यादा मिल जाएं, इसके लिए मां दूसरों के घर के बर्तन भी मांजा करती थीं। समय निकालकर चरखा भी चलाया करती थीं क्योंकि उससे भी कुछ पैसे जुट जाते थे। कपास के छिलके से रूई निकालने का काम, रुई से धागे बनाने का काम, ये सब कुछ मां खुद ही करती थीं। उन्हें डर रहता था कि कपास के छिलकों के कांटें हमें चुभ ना जाएं।

घर चलाने के लिए दो चार पैसे ज्यादा मिल जाएं, इसके लिए मां दूसरों के घर के बर्तन भी मांजा करती थीं। समय निकालकर चरखा भी चलाया करती थीं क्योंकि उससे भी कुछ पैसे जुट जाते थे। कपास के छिलके से रूई निकालने का काम, रुई से धागे बनाने का काम, ये सब कुछ मां खुद ही करती थीं। उन्हें डर रहता था कि कपास के छिलकों के कांटें हमें चुभ ना जाएं।

अपने काम के लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहना, अपना काम किसी दूसरे से करवाना उन्हें कभी पसंद नहीं आया। मुझे याद है, वडनगर वाले मिट्टी के घर में बारिश के मौसम से कितनी दिक्कतें होती थीं। लेकिन मां की कोशिश रहती थी कि परेशानी कम से कम हो। इसलिए जून के महीने में, कड़ी धूप में मां घर की छत की खपरैल को ठीक करने के लिए ऊपर चढ़ जाया करती थीं। वो अपनी तरफ से तो कोशिश करती ही थीं लेकिन हमारा घर इतना पुराना हो गया था कि उसकी छत, तेज बारिश सह नहीं पाती थी।

बारिश में हमारे घर में कभी पानी यहां से टकपता था, कभी वहां से। पूरे घर में पानी ना भर जाए, घर की दीवारों को नुकसान ना पहुंचे, इसलिए मां जमीन पर बर्तन रख दिया करती थीं। छत से टपकता हुआ पानी उसमें इकट्ठा होता रहता था। उन पलों में भी मैंने मां को कभी परेशान नहीं देखा, खुद को कोसते नहीं देखा। आप ये जानकर हैरान रह जाएंगे कि बाद में उसी पानी को मां घर के काम के लिए अगले 2–3 दिन तक इस्तेमाल करती थीं। जल संरक्षण का इससे अच्छा उदाहरण क्या हो सकता है।

मां को घर सजाने का, घर को सुंदर बनाने का भी बहुत शौक था। घर सुंदर दिखे, साफ दिखे, इसके लिए वो दिन भर लगी रहती थीं। वो घर के भीतर की जमीन को गोबर से लीपती थीं। आप लोगों को पता होगा कि जब उपले या गोबर के कंडे में आग लगाओ तो कई बार शुरू में बहुत धुआं होता है। मां तो बिना खिड़की वाले उस घर में उपले पर ही खाना बनाती थीं। धुआं निकल नहीं पाता था इसलिए घर के भीतर की दीवारें बहुत जल्दी काली हो जाया करती थीं। हर कुछ हफ्तों में मां उन दीवारों की भी पुताई कर दिया करती थीं। इससे घर में एक नयापन सा आ जाता था। मां मिट्टी की बहुत सुंदर कटोरियां बनाकर भी उन्हें सजाया करती थीं। पुरानी चीजों को रीसायकिल करने की हम भारतीयों में जो आदत है, मां उसकी भी चैंपियन रही हैं।

उनका एक और बड़ा ही निराला और अनोखा तरीका मुझे याद है। वो अक्सर पुराने कागजों को भिगोकर, उसके साथ इमली के बीज पीसकर एक पेस्ट जैसा बना लेती थीं, बिल्कुल गोंद की

तरह। फिर इस पेस्ट की मदद से वो दीवारों पर शीशे के टुकड़े चिपकाकर बहुत सुंदर चित्र बनाया करती थीं। बाजार से कुछ–कुछ सामान लाकर वो घर के दरवाजे को भी सजाया करती थीं।

मां इस बात को लेकर हमेशा बहुत नियम से चलती थीं कि बिस्तर बिल्कुल साफ–सुथरा हो, बहुत अच्छे से बिछा हुआ हो। धूल का एक भी कण उन्हें चादर पर बर्दाश्त नहीं था। थोड़ी सी सलवट देखते ही वो पूरी चादर फिर से झाड़कर करीने से बिछाती थीं। हम लोग भी मां की इस आदत का बहुत ध्यान रखते थे। आज इतने वर्षों बाद भी मां जिस घर में रहती हैं, वहां इस बात पर बहुत जोर देती हैं कि उनका बिस्तर जरा भी सिकुड़ा हुआ ना हो।

हर काम में पर्फेक्शन का उनका भाव इस उम्र में भी वैसा का वैसा ही है। और गांधीनगर में अब तो भैया का परिवार है, मेरे भतीजों का परिवार है, वो कोशिश करती हैं कि आज भी अपना सारा काम खुद ही करें।

साफ–सफाई को लेकर वो कितनी सतर्क रहती हैं, ये तो मैं आज भी देखता हूं। दिल्ली से मैं जब भी गांधीनगर जाता हूं, उनसे मिलने पहुंचता हूं, तो मुझे अपने हाथ से मिठाई जरूर खिलाती हैं। और जैसे एक मां, किसी छोटे बच्चे को कुछ खिलाकर उसका मुंह पोंछती है, वैसे ही मेरी मां आज भी मुझे कुछ खिलाने के बाद किसी रुमाल से मेरा मुंह जरूर पोंछती हैं। वो अपनी साड़ी में हमेशा एक रुमाल या छोटा तौलिया खोंसकर रखती हैं।

मां के सफाई प्रेम के तो इतने किस्से हैं कि लिखने में बहुत वक्त बीत जाएगा। मां में एक और खास बात रही है। जो साफ–सफाई के काम करता है, उसे भी मां बहुत मान देती है। मुझे याद है, वडनगर में हमारे घर के पास जो नाली थी, जब उसकी सफाई के लिए कोई आता था, तो मां बिना चाय पिलाए, उसे जाने नहीं देती थीं। बाद में सफाई वाले भी समझ गए थे कि काम के बाद अगर चाय पीनी है, तो वो हमारे घर में ही मिल सकती है।

मेरी मां की एक और अच्छी आदत रही है जो मुझे हमेशा याद रही। जीव पर दया करना उनके संस्कारों में झलकता रहा है। गर्मी के दिनों में पक्षियों के लिए वो मिट्टी के बर्तनों में दाना और पानी जरूर रखा करती थीं। जो हमारे घर के आसपास स्ट्रीट डॉग्स रहते थे, वो भूखे ना रहें, मां इसका भी खयाल रखती थीं।

?पिताजी अपनी चाय की दुकान से जो मलाई लाते थे, मां उससे बड़ा अच्छा घी बनाती थीं। और घी पर सिर्फ हम लोगों का ही अधिकार हो, ऐसा नहीं था। घी पर हमारे मोहल्ले की गायों का भी अधिकार था। मां हर रोज, नियम से गौमाता को रोटी खिलाती थी। लेकिन सूखी रोटी नहीं, हमेशा उस पर घी लगा के ही देती थीं।

भोजन को लेकर मां का हमेशा से ये भी आग्रह रहा है कि अन्न का एक भी दाना बर्बाद नहीं होना चाहिए। हमारे कस्बे में जब किसी के शादी–ब्याह में सामूहिक भोज का आयोजन होता था तो वहां जाने से पहले मां सभी को ये बात जरूर याद दिलाती थीं कि खाना खाते समय अन्न मत बर्बाद करना। घर में भी उन्होंने यही नियम बनाया हुआ था कि उतना ही खाना थाली में लो जितनी भूख हो।

मां आज भी जितना खाना हो, उतना ही भोजन अपनी थाली में लेती हैं। आज भी अपनी थाली में वो अन्न का एक दाना नहीं छोड़तीं। नियम से खाना, तय समय पर खाना, बहुत चबा–चबा के खाना इस उम्र में भी उनकी आदत में बना हुआ है।

मां हमेशा दूसरों को खुश देखकर खुश रहा करती हैं। घर में जगह भले कम हो लेकिन उनका दिल बहुत बड़ा है। हमारे घर से थोड़ी दूर पर एक गांव था जिसमें मेरे पिताजी के बहुत करीबी दोस्त रहा करते थे। उनका बेटा था अब्बास। दोस्त की असमय मृत्यु के बाद पिताजी अब्बास को हमारे घर ही ले आए थे। एक तरह से अब्बास हमारे घर में ही रहकर पढ़ा। हम सभी बच्चों की तरह मां अब्बास की भी बहुत देखभाल करती थीं। ईद पर मां, अब्बास के लिए उसकी पसंद के पकवान बनाती थीं। त्योहारों के समय आसपास के कुछ बच्चे हमारे यहां ही आकर खाना खाते थे। उन्हें भी मेरी मां के हाथ का बनाया खाना बहुत पसंद था।

हमारे घर के आसपास जब भी कोई साधु–संत आते थे तो मां उन्हें घर बुलाकर भोजन अवश्य कराती थीं। जब वो जाने लगते, तो मां अपने लिए नहीं बल्कि हम भाई–बहनों के लिए आशीर्वाद मांगती थीं। उनसे कहती थीं कि "मेरी संतानों को आशीर्वाद दीजिए कि वो दूसरों के सुख में सुख देखें और दूसरों के दुख से दुखी हों। मेरे बच्चों में भक्ति और सेवाभाव पैदा हो उन्हें ऐसा आशीर्वाद दीजिए"।

मेरी मां का मुझ पर बहुत अटूट विश्वास रहा है। उन्हें अपने दिए संस्कारों पर पूरा भरोसा रहा है। मुझे दशकों पुरानी एक घटना याद आ रही है। तब तक मैं संगठन में रहते हुए जनसेवा के काम में जुट चुका था। घरवालों से संपर्क ना के बराबर ही रह गया था। उसी दौर में एक बार मेरे बड़े भाई, मां को बद्रीनाथ जी, केदारनाथ जी के दर्शन कराने के लिए ले गए थे। बद्रीनाथ में जब मां ने दर्शन किए तो केदारनाथ में भी लोगों को खबर लग गई कि मेरी मां आ रही हैं।

उसी समय अचानक मौसम भी बहुत खराब हो गया था। ये देखकर कुछ लोग केदारघाटी से नीचे की तरफ चल पड़े। वो अपने साथ में कंबल भी ले गए। वो रास्ते में बुजुर्ग महिलाओं से पूछते जा रहे थे कि क्या आप नरेंद्र मोदी की मां हैं? ऐसे ही पूछते हुए वो लोग मां तक पहुंचे। उन्होंने मां को कंबल दिया, चाय पिलाई। फिर तो वो लोग पूरी यात्रा भर मां के साथ ही रहे। केदारनाथ पहुंचने पर उन लोगों ने मां के रहने के लिए अच्छा

इंतजाम किया। इस घटना का मां के मन में बड़ा प्रभाव पड़ा। तीर्थ यात्रा से लौटकर जब मां मुझसे मिलीं तो कहा कि "कुछ तो अच्छा काम कर रहे हो तुम, लोग तुम्हें पहचानते हैं"।

अब इस घटना के इतने वर्षों बाद, जब आज लोग मां के पास जाकर पूछते हैं कि आपका बेटा पीएम है, आपको गर्व होता होगा, तो मां का जवाब बड़ा गहरा होता है। मां उन्हें कहती है कि जितना आपको गर्व होता है, उतना ही मुझे भी होता है। वैसे भी मेरा कुछ नहीं है। मैं तो निमित्त मात्र हूं। वो तो भगवान का है।

आपने भी देखा होगा, मेरी मां कभी किसी सरकारी या सार्वजनिक कार्यक्रम में मेरे साथ नहीं जाती हैं। अब तक दो बार ही ऐसा हुआ है जब वो किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में मेरे साथ आई हैं।

एक बार मैं जब एकता यात्रा के बाद श्रीनगर के लाल चौक पर तिरंगा फहरा कर लौटा था, तो अमदाबाद में हुए नागरिक सम्मान कार्यक्रम में मां ने मंच पर आकर मेरा टीका किया था।

मां के लिए वो बहुत भावुक पल इसलिए भी था क्योंकि एकता यात्रा के दौरान फगवाड़ा में एक हमला हुआ था, उसमें कुछ लोग मारे भी गए थे। उस समय मां मुझे लेकर बहुत चिंता में थीं। तब मेरे पास दो लोगों का फोन आया था। एक अक्षरधाम मंदिर के श्रद्धेय प्रमुख स्वामी जी का और दूसरा फोन मेरी मां का था। मां को मेरा हाल जानकर कुछ तसल्ली हुई थी।

दूसरी बार वो सार्वजनिक तौर पर मेरे साथ तब आईं थी जब मैंने पहली बार मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी। 20 साल पहले का वो शपथग्रहण ही आखिरी समारोह है जब मां सार्वजनिक रूप से मेरे साथ कहीं उपस्थित रहीं हैं। इसके बाद वो कभी किसी कार्यक्रम में मेरे साथ नहीं आईं।

अक्षर ज्ञान के बिना भी को सचमुच में शिक्षित कैसे होता है, ये मैंने हमेशा अपनी मां में देखा। उनके सोचने का दृष्टिकोण, उनकी दूरगामी दृष्टि, मुझे कई बार हैरान कर देती है।

मुझे एक और वाकया याद आ रहा है। जब मैं सीएम बना था तो मेरे मन में इच्छा थी कि अपने सभी शिक्षकों का सार्वजनिक रूप से सम्मान करूं। मेरे मन में ये भी था कि मां तो मेरी सबसे बड़ी शिक्षक रही हैं, उनका भी सम्मान होना चाहिए। हमारे शास्त्रों में कहा भी गया है माता से बड़ा कोई गुरु नहीं है– 'नास्ति मातृ समो गुरुः'। इसलिए मैंने मां से भी कहा था कि आप भी मंच पर आइएगा। लेकिन उन्होंने कहा कि "देख भाई, मैं तो निमित्त मात्र हूं। तुम्हारा मेरी कोख से जन्म लेना लिखा हुआ था। तुम्हें मैंने नहीं भगवान ने गढ़ा है।"। ये कहकर मां उस कार्यक्रम में नहीं आई थीं। मेरे सभी शिक्षक आए थे, लेकिन मां उस कार्यक्रम से दूर ही रहीं।

लेकिन मुझे याद है, उन्होंने उस समारोह से पहले मुझसे ये जरूर पूछा था कि हमारे कस्बे में जो शिक्षक जेठाभाई जोशी जी थे क्या उनके परिवार से कोई उस कार्यक्रम में आएगा? बचपन में मेरी शुरुआती पढ़ाई–लिखाई, मुझे अक्षरज्ञान गुरुजी जेठाभाई जोशी जी ने कराया था। मां को उनका ध्यान था, ये भी पता था कि अब जोशी जी हमारे बीच नहीं हैं। वो खुद नहीं आईं लेकिन जेठाभाई जोशी जी के परिवार को जरूर बुलाने को कहा।

अक्षर ज्ञान के बिना भी कोई सचमुच में शिक्षित कैसे होता है, ये मैंने हमेशा अपनी मां में देखा। उनके सोचने का दृष्टिकोण, उनकी दूरगामी दृष्टि, मुझे कई बार हैरान कर देती है।

अपने नागरिक कर्तव्यों के प्रति मां हमेशा से बहुत सजग रही हैं। जब से चुनाव होने शुरू हुए पंचायत से पार्लियामेंट तक के इलेक्शन में उन्होंने वोट देने का दायित्व निभाया। कुछ समय पहले हुए गांधीनगर म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के चुनाव में भी मां वोट डालने गई थीं।

कई बार मुझे वो कहती हैं कि देखो भाई, पब्लिक का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है, ईश्वर का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है, तुम्हें कभी कुछ नहीं होगा। वो बोलती हैं कि अपना शरीर हमेशा अच्छा रखना, खुद को स्वस्थ रखना क्योंकि शरीर अच्छा रहेगा तभी तुम अच्छा काम भी कर पाओगे।

एक समय था जब मां बहुत नियम से चतुर्मास किया करती थीं। मां को पता है कि नवरात्रि के समय मेरे नियम क्या हैं। पहले तो नहीं कहती थीं, लेकिन इधर बीच वो कहने लगी हैं कि इतने साल तो कर लिया अब नवरात्रि के समय जो कठिन व्रत–तपस्या करते हो, उसे थोड़ा आसान कर लो।

मैंने अपने जीवन में आज तक मां से कभी किसी के लिए कोई शिकायत नहीं सुनी। ना ही वो किसी की शिकायत करती हैं और ना ही किसी से कुछ अपेक्षा रखती हैं।

मां के नाम आज भी कोई संपत्ति नहीं है। मैंने उनके शरीर पर कभी सोना नहीं देखा। उन्हें सोने–गहने का कोई मोह नहीं है। वो पहले भी सादगी से रहती थीं और आज भी वैसे ही अपने छोटे से कमरे में पूरी सादगी से रहती हैं।

ईश्वर पर मां की अगाथ आस्था है, लेकिन वो अंधविश्वास से कोसो दूर रहती हैं। हमारे घर को उन्होंने हमेशा अंधविश्वास से बचाकर रखा। वो शुरु से कबीरपंथी रही हैं और आज भी उसी परंपरा से अपना पूजा–पाठ करती हैं। हां, माला जपने की आदत सी पड़ गई है उन्हें। दिन भर भजन और माला जपना इतना ज्यादा हो जाता है कि नींद भी भूल जाती हैं। घर के लोगों को माला छिपानी पड़ती है, तब जाकर वो सोती हैं, उन्हें नींद आती है।

इतने बरस की होने के बावजूद, मां की याद्दाश्त अब भी बहुत अच्छी है। उन्हें दशकों पहले की भी बातें अच्छी तरह याद हैं। आज भी कभी कोई रिश्तेदार उनसे मिलने जाता है और अपना नाम बताता है, तो वो तुरंत उनके दादा–दादी या नाना–नानी का नाम लेकर बोलती हैं कि अच्छा तुम उनके घर से हो।

दुनिया में क्या चल रहा है, आज भी इस पर मां की नजर रहती है। हाल–फिलहाल में मैंने मां से पूछा कि आजकल टीवी कितना देखती हों? मां ने कहा कि टीवी पर तो जब देखो तब सब आपस में झगड़ा कर रहे होते हैं। हां, कुछ हैं जो शांति से समझाते हैं और मैं उन्हें देखती हूं। मां इतना कुछ गौर कर रही हैं, ये देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया।

उनकी तेज याद्दाश्त से जुड़ी एक और बात मुझे याद आ रही है। ये 2017 की बात है जब मैं यूपी चुनाव के आखिरी दिनों में, काशी में था। वहां से मैं अमदाबाद गया तो मां के लिए काशी से प्रसाद लेकर भी गया था। मां से मिला तो उन्होंने पूछा कि क्या काशी विश्वनाथ महादेव के दर्शन भी किए थे? मां पूरा ही नाम लेती

हैं– काशी विश्वनाथ महादेव। फिर बातचीत में मां ने पूछा कि क्या काशी विश्वनाथ महादेव के मंदिर तक जाने का रास्ता अब भी वैसा ही है, ऐसा लगता है किसी के घर में मंदिर बना हुआ है। मैंने हैरान होकर उनसे पूछा कि आप कब गई थीं? मां ने बताया कि बहुत साल पहले गईं थीं। मां को उतने साल पहले की गई तीर्थ यात्रा भी अच्छी तरह याद है।

मां में जितनी ज्यादा संवेदनशीलता है, सेवा भाव है, उतनी ही ज्यादा उनकी नजर भी पारखी रही है। मां छोटे बच्चों के उपचार के कई देसी तरीके जानती हैं। वडनगर वाले घर में तो अक्सर हमारे यहां सुबह से ही कतार लग जाती थी। लोग अपने 6–8 महीने के बच्चों को दिखाने के लिए मां के पास लाते थे।

इलाज करने के लिए मां को कई बार बहुत बारीक पावडर की जरूरत होती थी। ये पावडर जुटाने का इंतजाम घर के हम बच्चों का था। मां हमें चूल्हे से निकली राख, एक कटोरी और एक महीन सा कपड़ा दे देती थीं। फिर हम लोग उस कटोरी के मुंह पर वो कपड़ा कस के बांधकर 5–6 चुटकी राख उस पर रख देते थे। फिर धीरे–धीरे हम कपड़े पर रखी उस राख को रगड़ते थे। ऐसा करने पर राख के जो सबसे महीन कण होते थे, वो कटोरी में नीचे जमा होते जाते थे। मां हम लोगों को हमेशा कहती थीं कि "अपना काम अच्छे से करना। राख के मोटे दानों की वजह से बच्चों को कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए"।

ऐसी ही मुझे एक और बात याद आ रही है, जिसमें मां की ममता भी थी और सूझबूझ भी। दरअसल एक बार पिताजी को एक धार्मिक अनुष्ठान करवाना था। इसके लिए हम सभी को नर्मदा जी के तट पर किसी स्थान पर जाना था। भीषण गर्मी के दिन थे इसलिए वहां जाने के लिए हम लोग सुबह–सुबह ही घर से निकल लिए थे। करीब तीन–साढ़े तीन घंटे का सफर रहा होगा। हम जहां बस से उतरे, वहां से आगे का रास्ता पैदल ही जाना था। लेकिन गर्मी इतनी ज्यादा थी कि जमीन से जैसे आग निकल रही हो। इसलिए हम लोग नर्मदा जी किनारे पर पानी में पैर रखकर चलने लगे थे। नदी में इस तरह चलना आसान नहीं होता। कुछ ही देर में हम बच्चे बुरी तरह थक गए। जोर की भूख भी लगी थी। मां हम सभी की स्थिति देख रही थीं, समझ रही थीं। मां ने पिताजी को कहा कि थोड़ी देर के लिए बीच में यहीं रुक जाते हैं। मां ने पिताजी को तुरंत आसपास कहीं से गुड़ खरीदकर लाने को कहा। पिताजी दौड़े हुए गए और गुड़ खरीदकर लाए। मैं तब बच्चा था लेकिन गुड़ खाने के बाद पानी पीते ही जैसे शरीर में नई ऊर्जा आ गई। हम सभी फिर चल पड़े। उस गर्मी में पूजा के लिए उस तरह निकलना, मां की वो समझदारी, पिताजी का तुरंत गुड़ खरीदकर लाना, मुझे आज भी एक–एक पल अच्छी तरह याद है।

दूसरों की इच्छा का सम्मान करने की भावना, दूसरों पर अपनी इच्छा ना थोपने की भावना, मैंने मां में बचपन से ही देखी है। खासतौर पर मुझे लेकर वो बहुत ध्यान रखती थीं कि वो मेरे और मेरे निर्णयों के बीच कभी दीवार ना बनें। उनसे मुझे हमेशा प्रोत्साहन ही मिला। बचपन से वो मेरे मन में एक अलग ही प्रकार की प्रवृत्ति पनपते हुए देख रहीं थीं। मैं अपने सभी भाई–बहनों से अलग सा रहता था।

मेरी दिनचर्या की वजह से, मेरे तरह–तरह के प्रयोगों की वजह से कई बार मां को मेरे लिए अलग से इंतजाम भी करने पड़ते थे। लेकिन उनके चेहरे पर कभी शिकन नहीं आई, मां ने कभी इसे बोझ नहीं माना। जैसे मैं महीनों–महीनों के लिए खाने में नमक छोड़ देता था। कई बार ऐसा होता था कि मैं हफ्तों–हफ्तों अन्न त्याग देता था, सिर्फ दूध ही पीया करता था। कभी तय कर लेता था कि अब 6 महीने तक मीठा नहीं खाऊंगा। सर्दी के दिनों में, मैं खुले में सोता था, नहाने के लिए मटके के ठंडे पानी से नहाया करता था। मैं अपनी परीक्षा स्वयं ही ले रहा था। मां मेरे मनोभावों को समझ रही थीं। वो कोई जिद नहीं करती थीं। वो यही कहती थीं– ठीक है भाई, जैसा तुम्हारा मन करे।

मां को आभास हो रहा था कि मैं कुछ अलग ही दिशा में जा रहा हूं। मुझे याद है, एक बार हमारे घर के पास गिरी महादेव मंदिर में एक महात्मा जी आए हुए थे। वो हाथ में ज्वार उगा कर तपस्या कर रहे थे। मैं बड़े मन से उनकी सेवा में जुटा हुआ था। उसी दौरान मेरी मौसी की शादी पड़ गई थी। परिवार में सबको वहां जाने का बहुत मन था। मामा के घर जाना था, मां की बहन की शादी थी, इसलिए मां भी बहुत उत्साह में थीं। सब अपनी तैयारी में जुटे थे लेकिन मैंने मां के पास जाकर कहा कि मैं मौसी की शादी में नहीं जाना चाहता। मां ने वजह पूछी तो मैंने उन्हें महात्मा जी वाली बात बताई।

मां को दुख जरूर हुआ कि मैं उनकी बहन की शादी में नहीं जा रहा, लेकिन उन्होंने मेरे मन का आदर किया। वो यही बोलीं कि ठीक है, जैसा तुम्हारा मन करे, वैसा ही करो। लेकिन उन्हें इस बात की चिंता थी कि मैं अकेले घर में रहूंगा कैसे? मुझे तकलीफ ना हो इसलिए वो मेरे लिए 4–5 दिन का सूखा खाना बनाकर घर में रख गई थीं। मैंने जब घर छोड़ने का फैसला कर लिया, तो उसे भी मां कई दिन पहले ही समझ गई थीं। मैं मां–पिताजी से बात–बात में कहता ही रहता था कि मेरा मन करता है कि

बाहर जाकर देखूं, दुनिया क्या है। मैं उनसे कहता था कि रामकृष्ण मिशन के मठ में जाना है। स्वामी विवेकानंद जी के बारे में भी उनसे खूब बातें करता था। मां–पिताजी ये सब सुनते रहते थे। ये सिलसिला कई दिन तक लगातार चला।

एक दिन आखिरकार मैंने मां–पिता को घर छोड़ने की इच्छा बताई और उनसे आशीर्वाद मांगा। मेरी बात सुनकर पिताजी बहुत दुखी हुए। वो थोड़ा खिन्न होकर बोले– तुम जानो, तुम्हारा काम जाने। लेकिन मैंने कहा कि मैं ऐसे बिना आशीर्वाद घर छोड़कर नहीं जाऊंगा। मां को मेरे बारे में सब कुछ पता था ही। उन्होंने फिर मेरे मन का सम्मान किया। वो बोलीं कि जो तुम्हारा मन करे, वही करो। हां, पिताजी की तसल्ली के लिए उन्होंने उनसे कहा कि वो चाहें तो मेरी जन्मपत्री किसी को दिखा लें। हमारे एक रिश्तेदार को ज्योतिष का भी ज्ञान था। पिताजी मेरी जन्मपत्री के साथ उनसे मिले। जन्मपत्री देखने के बाद उन्होंने कहा कि "उसकी तो राह ही कुछ अलग है, ईश्वर ने जहां तय किया है, वो वहीं जाएगा"। इसके कुछ घंटों बाद ही मैंने घर छोड़ दिया था। तब तक पिताजी भी बहुत सहज हो चुके थे। पिताजी ने मुझे आशीर्वाद दिया। घर से निकलने से पहले मां ने मुझे दही और गुड़ भी खिलाया। वो जानती थीं कि अब मेरा आगे का जीवन कैसा होने जा रहा है। मां की ममता कितनी ही कठोर होने की कोशिश करे, जब उसकी संतान घर से दूर जा रही हो, तो पिघल ही जाती है। मां की आंख में आंसू थे लेकिन मेरे लिए खूब सारा आशीर्वाद भी था। घर छोड़ने के बाद के वर्षों में, मैं जहां रहा, जिस हाल में रहा, मां के आशीर्वाद की अनुभूति हमेशा मेरे साथ रही। मां मुझसे गुजराती में ही बात करती हैं। गुजराती में तुम के लिए तू और आप के लिए तमे कहा जाता है। मैं जितने दिन घर में रहा, मां मुझसे तू कहकर ही बात करती थीं। लेकिन जब मैंने घर छोड़ा, अपनी राह बदली, उसके बाद कभी भी मां ने मुझसे तू कहकर बात नहीं की। वो आज भी मुझे आप या तमे कहकर ही बात करती हैं।

मेरी मां ने हमेशा मुझे अपने सिद्धांत पर डटे रहने, गरीब के लिए काम करते रहने के लिए प्रेरित किया है। मुझे याद है, जब मेरा मुख्यमंत्री बनना तय हुआ तो मैं गुजरात में नहीं था। एयरपोर्ट से मैं सीधे मां से मिलने गया था। खुशी से भरी हुई मां का पहला सवाल यही था कि क्या तुम अब यहीं रहा करोगे? मां मेरा उत्तर जानती थीं। फिर मुझसे बोलीं– "मुझे सरकार में तुम्हारा काम तो समझ नहीं आता लेकिन मैं बस यही चाहती हूं कि तुम कभी रिश्वत नहीं लेना।'' यहां दिल्ली आने के बाद मां से मिलना–जुलना और भी कम हो गया है। जब गांधीनगर जाता हूं तो कभी–कभार मां के घर जाना होता है। मां से मिलना होता है, बस कुछ पलों के लिए। लेकिन मां के मन में इसे लेकर कोई नाराजगी या दुख का भाव मैंने आज तक महसूस नहीं किया। मां का स्नेह मेरे लिए वैसा ही है, मां का आशीर्वाद मेरे लिए वैसा ही है। मां अक्सर पूछती हैं– दिल्ली में अच्छा लगता है? मन लगता है? वो मुझे बार–बार याद दिलाती हैं कि मेरी चिंता मत किया करो, तुम पर बड़ी जिम्मेदारी है। मां से जब भी फोन पर बात होती है तो यही कहती हैं कि "देख भाई, कभी कोई गलत काम मत करना, बुरा काम मत करना, गरीब के लिए काम करना"।

आज अगर मैं अपनी मां और अपने पिता के जीवन को देखूं, तो उनकी सबसे बड़ी विशेषताएं रही हैं ईमानदारी और स्वाभिमान। गरीबी से जूझते हुए परिस्थितियां कैसी भी रही हों, मेरे माता–पिता ने ना कभी ईमानदारी का रास्ता छोड़ा ना ही अपने स्वाभिमान से समझौता किया। उनके पास हर मुश्किल से निकलने का एक ही तरीका था– मेहनत, दिन रात मेहनत।

पिताजी जब तक जीवित रहे उन्होंने इस बात का पालन किया कि वो किसी पर बोझ नहीं बनें। मेरी मां आज भी इसी प्रयास में रहती हैं कि किसी पर बोझ नहीं बनें, जितना संभव हो पाए, अपने काम खुद करें।

आज भी जब मैं मां से मिलता हूं, तो वो हमेशा कहती हैं कि "मैं मरते समय तक किसी की सेवा नहीं लेना चाहती, बस ऐसे ही चलते–फिरते चले जाने की इच्छा है"।

मैं अपनी माँ की इस जीवन यात्रा में देश की समूची मातृशक्ति के तप, त्याग और योगदान के दर्शन करता हूँ। मैं जब अपनी माँ और उनके जैसी करोड़ों नारियों के सामर्थ्य को देखता हूँ, तो मुझे ऐसा कोई भी लक्ष्य नहीं दिखाई देता जो भारत की बहनों–बेटियों के लिए असंभव हो।

अभाव की हर कथा से बहुत ऊपर, एक मां की गौरव गाथा होती है। संघर्ष के हर पल से बहुत ऊपर, एक मां की इच्छाशक्ति होती है। मां, आपको जन्मदिन की बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

सार्वजनिक रूप से कभी आपके लिए इतना लिखने का, इतना कहने का साहस नहीं कर पाया।

आप स्वस्थ रहें, हम सभी पर आपका आशीर्वाद बना रहे, ईश्वर से यही प्रार्थना है।

नमन।

सरकार की उपलब्धियां

वित्तीय वर्ष 2021-22 में 44 अरब अमेरिकी डॉलर का हुआ रिकॉर्ड वस्त्र निर्यात

अमेरिका 27 फीसदी हिस्सेदारी के साथ सबसे अधिक निर्यात किया गया। इसके बाद यूरोपीय संघ (18 फीसदी), बांग्लादेश (12 फीसदी) और संयुक्त अरब अमीरात (6 फीसदी) का स्थान है

केंद्रीय वस्त्र मंत्रालय द्वारा 31 मई को जारी एक बयान के अनुसार भारत ने वित्तीय वर्ष 2021-22 में हस्तशिल्प सहित कपड़ा व परिधान में 44.4 अरब अमेरिकी डॉलर निर्यात किया। यह अब तक का सबसे अधिक वस्त्र निर्यात है। इसमें वित्तीय वर्ष 2020-21 और वित्तीय वर्ष 2019-20 में संबंधित आंकड़ों की तुलना में क्रमशः 41 फीसदी और 26 फीसदी की पर्याप्त बढ़ोतरी का संकेत है।

अमेरिका 27 फीसदी हिस्सेदारी के साथ सबसे अधिक निर्यात किया गया। इसके बाद यूरोपीय संघ (18 फीसदी), बांग्लादेश (12 फीसदी) और संयुक्त अरब अमीरात (6 फीसदी) का स्थान है।

उत्पाद श्रेणियों के संदर्भ में 2021-22 के दौरान क्रमशः 39 फीसदी हिस्सेदारी के साथ कपास वस्त्रों का निर्यात 17.2 अरब अमेरिकी डॉलर था। इसमें वित्तीय वर्ष 2020-21 और वित्तीय वर्ष 2019-20 की तुलना में 54 फीसदी और 67 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

वहीं, वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान रेडी-मेड गारमेंट्स का निर्यात 36 फीसदी हिस्सेदारी के साथ 16 अरब अमेरिकी डॉलर था। यह वित्तीय वर्ष 2020-21 और वित्तीय वर्ष 2019-20 की तुलना में क्रमशः 31 फीसदी और 3 फीसदी की बढ़ोतरी को दर्शाता है।

मानव निर्मित वस्त्र निर्यात 14 फीसदी हिस्सेदारी के साथ 6.3 अरब अमेरिकी डॉलर था, जो कि वित्तीय वर्ष 2020-21 और वित्तीय वर्ष 2019-20 की तुलना में 2021-22 के दौरान क्रमशः 51 फीसदी और 18 फीसदी की बढ़ोतरी को दर्शाता है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान हस्तशिल्प का निर्यात 5 फीसदी हिस्सेदारी के साथ 2.1 अरब अमेरिकी डॉलर था। इसमें वित्तीय वर्ष 2020-21 और वित्तीय वर्ष 2019-20 की तुलना में क्रमशः 22 फीसदी और 16 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई। ■

10 इन-ऑर्बिट संचार उपग्रहों को भारत सरकार से न्यूस्पेस इंडिया को हस्तांतरित करने की मिली मंजूरी

इस मंजूरी से अंतरिक्ष क्षेत्र में घरेलू आर्थिक गतिविधियों को गति मिलने और वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ने की उम्मीद है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने आठ जून को 10 इन-ऑर्बिट संचार उपग्रहों को भारत सरकार से मेसर्स न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (एनएसआईएल), जो अंतरिक्ष विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत भारत सरकार का पूर्ण स्वामित्व वाला सार्वजनिक क्षेत्र का एक उपक्रम है, को हस्तांतरित किए जाने को मंजूरी दी।

गौरतलब है कि केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने एनएसआईएल की अधिकृत शेयर पूंजी को 1000 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 7500 करोड़ रुपये करने को भी मंजूरी दे दी।

एनएसआईएल को इन परिसंपत्तियों का हस्तांतरण इस कंपनी को पूंजी प्रधान कार्यक्रमों/परियोजनाओं को साकार करने के लिए वांछित वित्तीय स्वायत्तता प्रदान करेगा और इस प्रकार अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में रोजगार की व्यापक संभावनाओं और प्रौद्योगिकी आधारित अन्य लाभ की पेशकश करेगा। इस मंजूरी से अंतरिक्ष क्षेत्र में घरेलू आर्थिक गतिविधियों को गति मिलने और वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ने की उम्मीद है।

अंतरिक्ष क्षेत्र में किए गए सुधारों ने एनएसआईएल को समग्र वाणिज्यिक अंतरिक्ष गतिविधियों को शुरू करने और एक पूर्ण उपग्रह ऑपरेटर के रूप में कार्य करने का अधिकार दिया है। सिंगल-विंडो ऑपरेटर के रूप में कार्य करते हुए एनएसआईएल अंतरिक्ष क्षेत्र में व्यवसाय करने में आसानी की सुविधा भी प्रदान करेगी। एनएसआईएल बोर्ड को अब उपग्रह संचार के क्षेत्र में बाजार के परिदृश्य तथा वैश्विक रुझानों के अनुरूप ट्रांसपोंडरों का मूल्य निर्धारित करने का अधिकार

होगा। एनएसआईएल को अपनी आंतरिक नीतियों एवं दिशानिर्देशों के अनुसार क्षमता (कैपेसिटी) की पेशकश करने और उसे आवंटित करने के लिए भी अधिकृत किया गया है। ■

वैचारिकी

समष्टि का सामूहिक स्वरूप

पं. दीनदयाल उपाध्याय

व्यक्ति केवल शरीर नहीं, अपितु शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा, इन सबका एक संकलित, संगठित रूप है। व्यक्ति के समान समाज भी एक जीवमान चैतन्ययुक्त सत्ता है। जिस प्रकार व्यक्ति में शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा आदि रहते हैं, उसी प्रकार समाज में भी शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा ये रहते हैं। अब यह समाज का शरीर क्या है, हम लोग मुख्यतः राष्ट्र का विचार करें।

समष्टि कई प्रकार की होती है। एक व्यक्ति से ज्यादा व्यक्ति जब एकत्र होते हैं, तब उनकी समष्टि बनती है। कुटुंब, जाति, पंचायत, जनपद, राष्ट्र, मानव, सृष्टि, इस प्रकार क्रमशः समष्टि बढ़ती जाती है। व्यक्ति से मानवता तक अनेक समष्टियां हैं और इनका एक-दूसरे के साथ क्रमशः आरोह करता हुआ संबंध एक-दूसरे में मिल जाता है। व्यक्ति कुटुंब में, कुटुंब जाति में ऐसे मानव तक, इन सबमें व्यक्ति है। हर काम व्यक्ति से होता है। उदाहरणार्थ, शासन में बहुत लोग होते हैं। कोई विभिन्न विभागों का अधिकारी रहता है। विकास विभाग, पुलिस, शिक्षा, योजना आदि सारी जगह वह जाता है। उसी प्रकार व्यक्ति कुटुंब से लेकर सृष्टि तक सबका प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न आधार पर समष्टि बनती है। व्यक्तियों का समूह ही समष्टि है। कोई सी भी संस्था हो, उसमें (1) सदस्य (2) उद्देश्य निश्चित रहने (3) विधान नियमावली लिखित या अलिखित, बिना उसके चार लोगों का संगठन नहीं होता। (4) कृति, संस्था के अस्तित्व में हुआ काम यदि हो, वर्ष के समय में कहां-कहां खेले, इनाम कितने मिले, कहां-कहां किए। फिर मिले हुए, एक स्थान पर रखे रहते हैं, सर्टिफिकेट्स फ्रेम बनाकर लगाते हैं। यानी अच्छी-अच्छी चीजें तो रखी जाती हैं। गौरवास्पद बातों का संकलन होता है कि जिनसे आगे चलकर प्रेरणा ले सकें। इस प्रकार सदस्य, निश्चित उद्देश्य, संविधान और अच्छी कृति, ये चार बातें किसी भी समष्टि में रहती हैं।

ये चार बातें एक राष्ट्र के संबंध में भी लागू हैं। राष्ट्र यह एक समष्टि का सामूहिक स्वरूप है। राष्ट्र के घटक मनुष्य और भूमि होते हैं। मनुष्य, जिनका उस भूमि के साथ माता का संबंध है, जो उसको मातृभूमि, पितृभूमि कहे। यह संबंध स्वार्थ प्रेरित नहीं रहता। उस भूमि को कोई बेचने का विचार नहीं करता। उसके साथ इतना आत्मीयता का संबंध रहता है। यानी पुत्र रूप जनसमुदाय और भूमि मिलाकर देश होता है। देश, यानी जमीन के टुकड़े नहीं। दक्षिणी ध्रुव पर ज़मीन है, लेकिन वह देश नहीं कहा जाता। कारण, वहां मां समझकर उस पर रहने वाले मनुष्य नहीं हैं।

देश के घटक तो मनुष्य हैं, वे क्यों उस भूमि में उसे मां कहते हुए रहते हैं? वे कुछ-न-कुछ भगवान् से उद्देश्य लेकर आते हैं। राष्ट्रों के जीवनोद्देश्य का तय भगवान् की ओर से ही होता है। भगवान् की ओर से क्या तय हुआ, इसका पता लगाना पड़ता है। व्यक्ति भी अपना जीवनोद्देश्य तय नहीं कर सकता तो वह पहचानना पड़ता है। हम हिंदुस्तान में ही क्यों पैदा हुए? पुराने कर्म के अनुसार या तो यह जन्म उस भगवान् ने तय कर दिया, इसलिए यहां क्यों पैदा हुए, उसको ढूंढ़ना पड़ता है। जो खोज करते हुए जीवन जीते हैं, वे सफल होते हैं।

उदाहरणार्थ, पं. सातवलेकर जी पहले किसी के यहां मुनीम थे। उनको लगा कि अपना जीवनोद्देश्य किसी की नौकरी करना नहीं है। उन्होंने नौकरी छोड़ दी और वेद का संशोधन कार्य हाथ में लिया और उससे वे एक बड़े व्यक्ति बन गए। इस तरह राष्ट्र का उद्देश्य भी होता है। उसके अनुसार नियम बनते हैं। राष्ट्र के लिए कौन सी चीजें ठीक हैं, उसकी खोज करते हैं। अंतर्दृष्टि से, द्वंद्वातीत, निरपेक्ष भाव से खोज निकालते हैं। कहीं राष्ट्र-जीवन का साक्षात्कार कर लेते हैं। उस जीवनोद्देश्य को पूरा करने के लिए जो नियम बनते हैं। यह जो जीवनोद्देश्य है, उसको चिति कहते हैं। चिति, यानी राष्ट्र की प्रकृति, उसका साक्षात्कार कर लेने में मनुष्य को आनंद होता है। चिति को प्राप्त करने के लिए जो-जो आवश्यक और लायक चीजें होती हैं, उनको धर्म कहते हैं। यही राष्ट्र-धर्म है। अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जो प्रयत्न होते हैं, वही इतिहास है। जीवन में हुए विजय, बलिदान, त्याग, अन्यान्य व्यवहार, उनमें सुख, समाधान देनेवाली चीजें, जो गौरवास्पद हैं, जिनको स्मरण करते ही मनुष्य को आनंद होता है और आत्मसाक्षात्कार करने में आगे बढ़ता है। इस प्रकार इतिहास काल में हो गई गौरवमयी गाथाएं, कृतियों का संग्रह, यही अपनी संस्कृति है। राष्ट्र के घटक, मनुष्य और भूमि, राष्ट्र का जीवनोद्देश्य, राष्ट्रधर्म और राष्ट्र-संस्कृति, ये चार बातें मिलाकर ही राष्ट्र होता है। व्यक्ति और राष्ट्र के संबंध कैसे? राष्ट्र व्यक्ति के सहारे काम करता है।

पंखुड़ियों से फूल बनता है, दोनों का अस्तित्व अलग-अलग नहीं। राष्ट्र का जीवन प्रखर करने में ही व्यक्ति की सार्थकता रहती है। इनमें परस्पर विरोध नहीं। राष्ट्र के उत्कर्ष का माध्यम बनने में ही व्यक्ति-जीवन का विकास है। उद्देश्य का विस्मरण हो जाने से संघर्ष निर्माण होता है। समाज व्यक्ति को ग़ुलाम नहीं बनाता। अपने वर्ग में शिक्षक अपने से संचालन कराता है। इसमें अपने को कोई ग़ुलाम नहीं बनाता। पुलिस अधिकारी क्यों न हो, पुलिस के हाथ दिखाते ही मोटरकार रुक जाती है। यह बंधन नहीं। रक्षण और विकास के लिए आवश्यक है। इस प्रकार व्यक्ति विकास और समाज का हित इसमें समन्वय है। इन दोनों में संघर्ष नहीं। व्यक्ति के विकास और हित के लिए जो व्यवस्था कही गई है, उसको हम पुरुषार्थ कहते हैं। ■ क्रमशः

-संघ शिक्षा वर्ग, बौद्धिक वर्ग: बंगलौर, मई 27, 1965

भाजपा प्रदेश मुख्यालय में मा0 सांसदगणों की बैठक, लखनऊ

उत्तर प्रदेश कोऑपरेटिव फेडरेशन लि0 (PCF)
चुनाव में निर्वाचित प्रतिनिधियों का स्वागत

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
जून द्वितीय अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी